قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

وَمَآ اُبَرِّئُ

पारा - 13

وَمَآ	اُبَرِّئُ	نَفْسِيْ ج	اِنَّ	النَّفْسَ	لَاَمَّارَةٌۢ	بِالسُّوْٓءِ	اِلَّا
और नहीं	मैं बरी करता/करती	अपने नफ़्स को	बेशक	नफ़्स	अलबत्ता बहुत हुक्म देने वाला है	बुराई का	मगर

مَا	رَحِمَ	رَبِّيْ ط	اِنَّ	رَبِّيْ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (53)	وَقَالَ	الْمَلِكُ
जिस पर	रहम करे	मेरा रब	बेशक	मेरा रब	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और कहा	बादशाह ने

ائْتُوْنِيْ	بِهٖٓ	اَسْتَخْلِصْهُ	لِنَفْسِيْ ج	فَلَمَّا	كَلَّمَهٗ	قَالَ
लाओ मेरे पास	उसे	मैं उसे ख़ास कर लूं	अपनी ज़ात के लिए	फिर जब	उसने बात चीत की उससे	कहा

اِنَّكَ	الْيَوْمَ	لَدَيْنَا	مَكِيْنٌ	اَمِيْنٌ (54)	قَالَ	اجْعَلْنِيْ
बेशक तू	आज से	हमारे यहां	मर्तबे वाला	अमानतदार है	उसने कहा	मुक़र्रर कर दीजिए मुझे

عَلٰى خَزَآئِنِ	الْاَرْضِ ج	اِنِّيْ	حَفِيْظٌ	عَلِيْمٌ (55)	وَكَذٰلِكَ
ख़ज़ानों पर	ज़मीन के	बेशक मैं हूं	बहुत हिफ़ाज़त करने वाला	ख़ूब इल्म रखने वाला	और इसी तरह

مَكَّنَّا	لِيُوْسُفَ	فِي الْاَرْضِ ج	يَتَبَوَّاُ	مِنْهَا	حَيْثُ	يَشَآءُ ط	نُصِيْبُ
इक़्तिदार दिया हमने	यूसुफ़ को	ज़मीन में	वो रहता	उसमें	जहां	वो चाहता	हम पहुंचाते हैं

بِرَحْمَتِنَا	مَنْ	نَّشَآءُ	وَلَا	نُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُحْسِنِيْنَ (56)	وَلَاَجْرُ
अपनी रहमत को	जिसे	हम चाहते हैं	और नहीं	हम ज़ाया करते	अजर	एहसान करने वालों का	और यक़ीनन अजर

ع 7 8 1

الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ (57) ع	وَجَآءَ	اِخْوَةُ
आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	ईमान लाए	और हैं वो	वो तक़वा करते/डरते	और आए	भाई

يُوْسُفَ	فَدَخَلُوْا	عَلَيْهِ	فَعَرَفَهُمْ	وَهُمْ	لَهٗ	مُنْكِرُوْنَ (58)
यूसुफ़ के	फिर वो दाख़िल हुए	उस पर	पस उसने पहचान लिया उन्हें	जबकि वो	उससे	नावाक़िफ़ थे

وَلَمَّا	جَهَّزَهُمْ	بِجَهَازِهِمْ	قَالَ	ائْتُوْنِيْ	بِاَخٍ	لَّكُمْ
और जब	उसने तैयार करके दिया उन्हें	सामान उनका	कहा	लाना मेरे पास	भाई को	अपने

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ	اَلَا	تَرَوْنَ	اَنِّيْٓ	اُوْفِي	الْكَيْلَ	وَاَنَا	خَيْرُ
अपने बाप की तरफ़ से	क्या नहीं	तुम देखते	बेशक मैं	मैं पूरा-पूरा देता हूं	पैमाना (ग़ल्ला)	और मैं	बेहतर हूं

الْمُنْزِلِيْنَ ﴿59﴾	فَاِنْ	لَّمْ	تَاْتُوْنِيْ	بِهٖ	فَلَا	كَيْلَ	لَكُمْ
सब मेज़बानी करने वालों से	फिर अगर	ना	तुम लाए मेरे पास	उसे	तो नहीं	कोई पैमाना (ग़ल्ला)	तुम्हारे लिए

عِنْدِيْ	وَلَا	تَقْرَبُوْنِ ﴿60﴾	قَالُوْا	سَنُرَاوِدُ	عَنْهُ	اَبَاهُ	وَاِنَّا
मेरे पास	और ना	तुम क़रीब आना मेरे	उन्होंने कहा	ज़रूर हम आमादा करेंगे	उसके बारे में	उसके वालिद को	और बेशक हम

لَفٰعِلُوْنَ ﴿61﴾	وَقَالَ	لِفِتْيٰنِهِ	اجْعَلُوْا	بِضَاعَتَهُمْ	فِيْ رِحَالِهِمْ
ज़रूर करने वाले हैं	और उसने कहा	अपने ग़ुलामों को	रख दो	पूंजी/सरमाया इनका	इनके सामाने सफ़र में

لَعَلَّهُمْ	يَعْرِفُوْنَهَآ	اِذَا	انْقَلَبُوْٓا	اِلٰٓى اَهْلِهِمْ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿62﴾
शायद कि वो	वो उसे पहचान जाऐं	जब	वो पलटें	तरफ़ अपने घर वालों के	शायद कि वो	वो लौट आऐं

فَلَمَّا	رَجَعُوْٓا	اِلٰٓى اَبِيْهِمْ	قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	مُنِعَ	مِنَّا	الْكَيْلُ
तो जब	वो लौटे	तरफ़ अपने वालिद के	उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	रोक दिया गया	हमसे	पैमाना (ग़ल्ला)

فَاَرْسِلْ	مَعَنَآ	اَخَانَا	نَكْتَلْ	وَاِنَّا	لَهٗ	لَحٰفِظُوْنَ ﴿63﴾	قَالَ
तो भेज दें	साथ हमारे	हमारे भाई को	हम नाप भर ग़ल्ला लाऐं	और बेशक हम	उसकी	अलबत्ता हिफ़ाज़त करने वाले हैं	कहा

هَلْ	اٰمَنُكُمْ	عَلَيْهِ	اِلَّا	كَمَآ	اَمِنْتُكُمْ	عَلٰٓى اَخِيْهِ
नहीं	मैं एतबार कर सकता तुम पर	इसके मामले में	मगर	जैसा कि	एतबार किया था मैंने तुम पर	उसके भाई के मामले में

مِنْ قَبْلُ ؕ	فَاللّٰهُ	خَيْرٌ	حٰفِظًا ۪	وَّهُوَ	اَرْحَمُ	الرّٰحِمِيْنَ ﴿64﴾
इससे क़ब्ल	पस अल्लाह	बेहतरीन	हिफ़ाज़त करने वाला है	और वो ही	सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है	रहम करने वालों से

وَلَمَّا	فَتَحُوْا	مَتَاعَهُمْ	وَجَدُوْا	بِضَاعَتَهُمْ	رُدَّتْ	اِلَيْهِمْ ؕ
और जब	उन्होंने खोला	सामान अपना	उन्होंने पाया	अपनी पूंजी को	जो लौटा दी गई थी	तरफ़ उनके

قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	مَا	نَبْغِيْ ؕ	هٰذِهٖ	بِضَاعَتُنَا	رُدَّتْ	اِلَيْنَا ۚ
उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	(और) क्या	हम चाहते हैं	ये है	पूंजी हमारी	जो लौटा दी गई है	तरफ़ हमारे

وَنَمِيْرُ	اَهْلَنَا	وَنَحْفَظُ	اَخَانَا	وَنَزْدَادُ	كَيْلَ	بَعِيْرٍ ؕ
और हम ग़ल्ला लाएंगे	अपने घर वालों के लिए	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने भाई की	और हम ज़्यादा लेंगे	पैमाना (ग़ल्ला)	एक ऊंट का

ذٰلِكَ	كَيْلٌ	يَّسِيْرٌ (65)	قَالَ	لَنْ	اُرْسِلَهٗ	مَعَكُمْ	حَتّٰى
ये	पैमाना (ग़ल्ला) है	बहुत आसान	कहा	हरगिज़ नहीं	मैं भेजूंगा उसे	साथ तुम्हारे	यहां तक कि

تُؤْتُوْنِ	مَوْثِقًا	مِّنَ اللّٰهِ	لَتَاْتُنَّنِيْ	بِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	يُّحَاطَ
तुम दो मुझे	पुख़्ता वादा	अल्लाह (के नाम) से	अलबत्ता तुम ज़रूर लाओगे मेरे पास	उसे	मगर	ये कि	घेर लिया जाए

بِكُمْ ۚ	فَلَمَّآ	اٰتَوْهُ	مَوْثِقَهُمْ	قَالَ	اللّٰهُ	عَلٰى	مَا	نَقُوْلُ
तुम्हें	फिर जब	उन्होंने दिया उसे	पुख़्ता वादा अपना	उसने कहा	अल्लाह	उस पर	जो	हम कहते हैं

وَكِيْلٌ (66)	وَقَالَ	يٰبَنِيَّ	لَا تَدْخُلُوْا	مِنْ بَابٍ	وَّاحِدٍ	وَّادْخُلُوْا
निगहबान है	और उसने कहा	ऐ मेरे बेटो	ना तुम दाख़िल होना	दरवाज़े से	एक ही	और तुम दाख़िल होना

مِنْ اَبْوَابٍ	مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ	وَمَآ	اُغْنِيْ	عَنْكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ ؕ
दरवाजों से	मुख़्तलिफ़	और नहीं	मैं बचा सकता	तुम्हें	अल्लाह से	कुछ भी

اِنِ	الْحُكْمُ	اِلَّا	لِلّٰهِ ؕ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ ۚ	وَعَلَيْهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ
नहीं	फ़ैसला	मगर	अल्लाह ही के लिए	उसी पर	तवक्कल किया मैंने	और उसी पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें

الْمُتَوَكِّلُوْنَ (67)	وَلَمَّا	دَخَلُوْا	مِنْ حَيْثُ	اَمَرَهُمْ	اَبُوْهُمْ ؕ	مَا
तवक्कल करने वाले	और जब	वो दाख़िल हुए	जहाँ से	हुक्म दिया था उन्हें	उनके वालिद ने	ना

كَانَ	يُغْنِيْ	عَنْهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ	اِلَّا	حَاجَةً	فِيْ نَفْسِ
था कि	काम आता	उन्हें	अल्लाह से	कुछ भी	मगर	एक हाजत थी	दिल में

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَعْقُوْبَ	قَضٰىهَا ؕ	وَ اِنَّهٗ	لَذُوْ عِلْمٍ	لِّمَا	عَلَّمْنٰهُ	وَلٰكِنَّ
याक़ूब के	उसने पूरा किया जिसे	और बेशक वो	अलबत्ता इल्म वाला था	बवजह उसके जो	सिखाया था हमने उसे	और लेकिन

ع 8 11 2

اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ (68) ع	وَ لَمَّا	دَخَلُوْا	عَلٰى يُوْسُفَ	اٰوٰى
अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	और जब	वो दाख़िल हुए	यूसुफ़ पर	उसने जगह दी

اِلَيْهِ	اَخَاهُ	قَالَ	اِنِّيْٓ	اَنَا	اَخُوْكَ	فَلَا	تَبْتَئِسْ	بِمَا
अपने पास	अपने भाई को	उसने कहा	बेशक मैं	मैं ही	तेरा भाई हूं	पस ना	तू रंज कर	बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (69)	فَلَمَّا	جَهَّزَهُمْ	بِجَهَازِهِمْ	جَعَلَ	السِّقَايَةَ
थे वो	वो अमल करते	फिर जब	उसने तैयार कर के दिया उन्हें	सामान उनका	उसने रख दिया	प्याला

فِيْ رَحْلِ	اَخِيْهِ	ثُمَّ	اَذَّنَ	مُؤَذِّنٌ	اَيَّتُهَا الْعِيْرُ	اِنَّكُمْ
सामान में	अपने भाई के	फिर	पुकारा	एक पुकारने वाले ने	ऐ क़ाफ़िले वालो	बेशक तुम

لَسٰرِقُوْنَ (70)	قَالُوْا	وَ اَقْبَلُوْا	عَلَيْهِمْ	مَّاذَا	تَفْقِدُوْنَ (71)	قَالُوْا
अलबत्ता चोर हो	उन्होंने कहा	जबकि वो मुतावज्जेह हुए	उनकी तरफ़	क्या चीज़	तुम गुम पाते हो	उन्होंने कहा

نَفْقِدُ	صُوَاعَ	الْمَلِكِ	وَلِمَنْ	جَآءَ	بِهٖ	حِمْلُ	بَعِيْرٍ
हम गुम पाते हैं	पैमाना	बादशाह का	और उसके लिए जो	लाए	उसे	बोझ है	एक ऊंट का

وَّ اَنَا	بِهٖ	زَعِيْمٌ (72)	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	لَقَدْ	عَلِمْتُمْ	مَّا
और मैं	उसका	ज़ामिन हूं	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया तुमने	नहीं

جِئْنَا	لِنُفْسِدَ	فِي الْاَرْضِ	وَمَا	كُنَّا	سٰرِقِيْنَ (73)	قَالُوْا
आए थे हम	कि हम फ़साद करें	ज़मीन में	और नहीं	हैं हम	चोरी करने वाले	उन्होंने कहा

فَمَا	جَزَآؤُهٗٓ	اِنْ	كُنْتُمْ	كٰذِبِيْنَ (74)	قَالُوْا	جَزَآؤُهٗ	مَنْ
तो क्या	बदला है उसका	अगर	हो तुम	झूठे	उन्होंने कहा	बदला उसका	वो है जो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وُّجِدَ	فِيْ رَحْلِهٖ	فَهُوَ	جَزَآؤُهٗ ؕ	كَذٰلِكَ	نَجْزِي	الظّٰلِمِيْنَ ﴿75﴾
वो पाया गया	उसके सामान में	तो वो ही	बदला है उसका	इसी तरह	हम बदला देते हैं	ज़ालिमों को

فَبَدَاَ	بِاَوْعِيَتِهِمْ	قَبْلَ	وِعَآءِ	اَخِيْهِ	ثُمَّ	اسْتَخْرَجَهَا
पस उसने शुरू किया	उनके थैलों/ख़ुरजियों से	पहले	थैले/ख़ुरजी से	अपने भाई के	फिर	उसने निकाल लिया उसे

مِنْ وِّعَآءِ	اَخِيْهِ ؕ	كَذٰلِكَ	كِدْنَا	لِيُوْسُفَ ؕ	مَا	كَانَ	لِيَاْخُذَ
थैले/ख़ुरजी से	अपने भाई की	इस तरह	तदबीर की हमने	यूसुफ़ के लिए	ना	था वो	कि वो पकड़ सके

اَخَاهُ	فِيْ دِيْنِ	الْمَلِكِ	اِلَّآ	اَنْ	يَّشَآءَ	اللّٰهُ ؕ	نَرْفَعُ
अपने भाई को	दीन/क़ानून में	बादशाह के	मगर	ये कि	जो चाहे	अल्लाह	हम बुलंद करते हैं

دَرَجٰتٍ	مَّنْ	نَّشَآءُ ؕ	وَفَوْقَ	كُلِّ	ذِيْ عِلْمٍ	عَلِيْمٌ ﴿76﴾	قَالُوْٓا
दरजात	जिसके	हम चाहते हैं	और ऊपर	हर	इल्म वाले के	एक ख़ूब इल्म वाला है	उन्होंने कहा

اِنْ	يَّسْرِقْ	فَقَدْ	سَرَقَ	اَخٌ	لَّهٗ	مِنْ قَبْلُ ۚ	فَاَسَرَّهَا
अगर	इसने चोरी की है	तो तहक़ीक़	चोरी की थी	भाई ने	इसके	इससे क़ब्ल	तो छुपा लिया इस बात को

يُوْسُفُ	فِيْ نَفْسِهٖ	وَلَمْ	يُبْدِهَا	لَهُمْ ۚ	قَالَ	اَنْتُمْ	شَرٌّ
यूसुफ़ ने	अपने दिल में	और नहीं	उसने ज़ाहिर किया उसे	उनके लिए	कहा	तुम	बुरे हो

مَّكَانًا ۚ	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	تَصِفُوْنَ ﴿77﴾	قَالُوْا	يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ	
मक़ाम में	और अल्लाह	ख़ूब जानता है	उसे जो	तुम बयान कर रहे हो	उन्होंने कहा	ऐ अज़ीज़	

اِنَّ	لَهٗٓ	اَبًا	شَيْخًا	كَبِيْرًا	فَخُذْ	اَحَدَنَا	مَكَانَهٗ ۚ
बेशक	इसका	बाप	बूढ़ा	बड़ी उम्र का है	पस तू रख ले	हम में से किसी एक को	इसकी जगह

اِنَّا	نَرٰىكَ	مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿78﴾	قَالَ	مَعَاذَ	اللّٰهِ	اَنْ
बेशक हम	हम देखते हैं तुझे	मोहसिनीन में से	उसने कहा	पनाह	अल्लाह की	कि

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَّاْخُذَ	اِلَّا	مَنْ	وَّجَدْنَا	مَتَاعَنَا	عِنْدَهٗٓ	اِنَّآ	اِذًا
हम पकड़ें	मगर	उसको	पाया हमने	सामान अपना	पास जिसके	बेशक हम	तब

لَّظٰلِمُوْنَ ﴿79﴾ ع	فَلَمَّا	اسْتَيْـَٔسُوْا	مِنْهُ	خَلَصُوْا	نَجِيًّا ؕ	قَالَ	ع 9 11 3
अलबत्ता ज़ालिम होंगे	फिर जब	वो मायूस हो गए	उस से	वो अलग हुए	सरगोशी के लिए	कहा	

كَبِيْرُهُمْ	اَلَمْ	تَعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اَبَاكُمْ	قَدْ	اَخَذَ	عَلَيْكُمْ
उनके बड़े ने	क्या नहीं	तुम जानते	कि बेशक	तुम्हारे वालिद ने	तहक़ीक़	लिया था	तुम से

مَّوْثِقًا	مِّنَ اللّٰهِ	وَمِنْ قَبْلُ	مَا	فَرَّطْتُّمْ	فِيْ يُوْسُفَ ۚ	فَلَنْ	
पुख़्ता वादा	अल्लाह (के नाम) से	और इससे पहले	जो	कोताही कर चुके तुम	यूसुफ़ के मामले में	तो हरगिज़ ना	

اَبْرَحَ	الْاَرْضَ	حَتّٰى	يَاْذَنَ	لِيْٓ	اَبِيْٓ	اَوْ	يَحْكُمَ
मैं टलूंगा	(इस) ज़मीन से	यहां तक कि	इजाज़त दे	मुझे	मेरा वालिद	या	फ़ैसला कर दे

اللّٰهُ	لِيْ ۚ	وَهُوَ	خَيْرُ	الْحٰكِمِيْنَ ﴿80﴾	اِرْجِعُوْٓا	اِلٰٓى اَبِيْكُمْ
अल्लाह	मेरे लिए	और वो	बेहतर है	सब फ़ैसला करने वालों से	लौट जाओ	तरफ़ अपने वालिद के

فَقُوْلُوْا	يٰٓاَبَانَآ	اِنَّ	ابْنَكَ	سَرَقَ ۚ	وَمَا	شَهِدْنَآ	اِلَّا
फिर कहो	ऐ हमारे अब्बा जान	बेशक	आपके बेटे ने	चोरी की थी	और नहीं	गवाही दी हमने	मगर

بِمَا	عَلِمْنَا	وَمَا	كُنَّا	لِلْغَيْبِ	حٰفِظِيْنَ ﴿81﴾	وَسْـَٔلِ	الْقَرْيَةَ
वो जिसका	इल्म था हमें	और नहीं	थे हम	ग़ैब की	हिफ़ाज़त करने वाले	और पूछ लें	बस्ती वालों से

الَّتِيْ	كُنَّا	فِيْهَا	وَالْعِيْرَ	الَّتِيْٓ	اَقْبَلْنَا	فِيْهَا ؕ	وَاِنَّا
वो जो	थे हम	जिस में	और क़ाफ़िले वालों से	वो जो	आए हैं हम	जिस में	और बेशक हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿82﴾	قَالَ	بَلْ	سَوَّلَتْ	لَكُمْ	اَنْفُسُكُمْ	اَمْرًا ؕ
अलबत्ता सच्चे हैं	कहा	बल्कि	अच्छा कर दिखाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों ने	एक काम को

فَصَبْرٌ	جَمِيْلٌ ؕ	عَسَى	اللّٰهُ	اَنْ	يَّاْتِيَنِيْ	بِهِمْ	جَمِيْعًا ؕ
तो सब्र ही	अच्छा है	उम्मीद है	अल्लाह	कि	वो ले आएगा मेरे पास	उन को	सबके सबको

اِنَّهٗ	هُوَ	الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ ﴿83﴾	وَتَوَلّٰى	عَنْهُمْ	وَقَالَ	يٰۤاَسَفٰى
क्योंकि वो	वो ही है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला	और उसने मुंह फेर लिया	उनसे	और बोला	हाय अफ़सोस

عَلٰى يُوْسُفَ	وَابْيَضَّتْ	عَيْنٰهُ	مِنَ الْحُزْنِ	فَهُوَ	كَظِيْمٌ ﴿84﴾
यूसुफ़ पर	और सफ़ेद हो गईं	दोनों आंखें उसकी	ग़म की वजह से	पस वो	ग़म से भरा हुआ था

قَالُوْا	تَاللّٰهِ	تَفْتَؤُا	تَذْكُرُ	يُوْسُفَ	حَتّٰى	تَكُوْنَ	حَرَضًا
उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	आप हमेशा रहते हैं	आप याद करते	यूसुफ़ को	यहां तक कि	आप हो जाऐं	बीमार

اَوْ	تَكُوْنَ	مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿85﴾	قَالَ	اِنَّمَاۤ	اَشْكُوْا	بَثِّيْ
या	आप हो जाऐं	हलाक होने वालों में से	उसने कहा	बेशक	मैं शिकायत करता हूं	अपनी बेक़रारी की

وَحُزْنِيْۤ	اِلَى اللّٰهِ	وَاَعْلَمُ	مِنَ اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾	يٰبَنِيَّ
और अपने ग़म की	तरफ़ अल्लाह के	और मैं जानता हूं	अल्लाह की तरफ़ से	जो	नहीं तुम जानते	ऐ मेरे बेटो

اذْهَبُوْا	فَتَحَسَّسُوْا	مِنْ يُّوْسُفَ	وَاَخِيْهِ	وَلَا	تَايْـَٔسُوْا	مِنْ رَّوْحِ
जाओ	पस सुराग़ लगाओ	यूसुफ़ का	और उसके भाई का	और ना	तुम मायूस हो	रहमत से

اللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يَايْـَٔسُ	مِنْ رَّوْحِ	اللّٰهِ	اِلَّا	الْقَوْمُ	الْكٰفِرُوْنَ ﴿87﴾
अल्लाह की	क्योंकि वो	नहीं मायूस होते	रहमत से	अल्लाह की	मगर	वो लोग	जो काफ़िर हैं

فَلَمَّا	دَخَلُوْا	عَلَيْهِ	قَالُوْا	يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ	مَسَّنَا	وَاَهْلَنَا
फिर जब	वो दाख़िल हुए	उस पर	वो कहने लगे	ऐ अज़ीज़	पहुंची हमें	और हमारे घर वालों को

الضُّرُّ	وَجِئْنَا	بِبِضَاعَةٍ	مُّزْجٰىةٍ	فَاَوْفِ	لَنَا	الْكَيْلَ
तकलीफ़	और लाए हैं हम	पूंजी/सरमाया	हक़ीर	पस पूरा-पूरा दे दीजिए	हमें	पैमाना/ग़ल्ला

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَتَصَدَّقْ	عَلَيْنَا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَجْزِى	الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿88﴾	قَالَ	هَلْ
और सदक़ा कीजिए	हम पर	बेशक	अल्लाह	वो बदला देता है	सदक़ा करने वालों को	उसने कहा	क्या

عَلِمْتُمْ	مَّا	فَعَلْتُمْ	بِيُوْسُفَ	وَاَخِيْهِ	اِذْ	اَنْتُمْ	جٰهِلُوْنَ ﴿89﴾
जानते हो तुम	जो	किया था तुमने	साथ यूसुफ़ के	और उसके भाई के	जब	तुम	नादान थे

قَالُوْٓا	ءَاِنَّكَ	لَاَنْتَ	يُوْسُفُ ؕ	قَالَ	اَنَا	يُوْسُفُ	وَهٰذَآ
उन्होंने कहा	क्या बेशक तू	अलबत्ता तू है	यूसुफ़	उसने कहा	मैं हूं	यूसुफ़	और ये है

اَخِىْ ۬	قَدْ	مَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْنَا ؕ	اِنَّهٗ	مَنْ	يَّتَّقِ	وَيَصْبِرْ
मेरा भाई	तहक़ीक़	एहसान किया	अल्लाह ने	हम पर	बेशक	जो	तक़वा करे	और वो सब्र करे

فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿90﴾	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	لَقَدْ
तो यक़ीनन	अल्लाह	नहीं वो ज़ाया करता	अजर	मोहसिनीन का	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़

اٰثَرَكَ	اللّٰهُ	عَلَيْنَا	وَاِنْ	كُنَّا	لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿91﴾	قَالَ	لَا تَثْرِيْبَ
तरजीह दी तुझे	अल्लाह ने	हम पर	और बेशक	थे हम	यक़ीनन ख़ताकार	उसने कहा	नहीं कोई मलामत

عَلَيْكُمُ	الْيَوْمَ ؕ	يَغْفِرُ	اللّٰهُ	لَكُمْ ۫	وَهُوَ	اَرْحَمُ
तुम पर	आज के दिन	माफ़ कर दे	अल्लाह	तुम्हें	और वो	सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है

الرّٰحِمِيْنَ ﴿92﴾	اِذْهَبُوْا	بِقَمِيْصِىْ	هٰذَا	فَاَلْقُوْهُ	عَلٰى وَجْهِ
सब रहम करने वालों से	ले जाओ	क़मीज़ मेरी	ये	फिर डाल दो इसे	चेहरे पर

اَبِىْ	يَاْتِ	بَصِيْرًا ۚ	وَاْتُوْنِىْ	بِاَهْلِكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿93﴾ ع	وَلَمَّا
मेरे वालिद के	वो हो जाएगा	देखने वाला	और ले आओ मेरे पास	अपने घर वालों को	सबके सबको	और जब

ع 10 14 4

فَصَلَتِ	الْعِيْرُ	قَالَ	اَبُوْهُمْ	اِنِّىْ	لَاَجِدُ	رِيْحَ	يُوْسُفَ
जुदा हुआ	क़ाफ़िला	कहा	उनके वालिद ने	बेशक मैं	अलबत्ता मैं पाता हूं	ख़ुशबू/हवा	यूसुफ़ की

لَوْلَآ	اَنْ	تُفَنِّدُوْنِ ﴿94﴾	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	اِنَّكَ	لَفِيْ ضَلٰلِكَ
अगर ना	ये कि	तुम बहका हुआ कहो मुझे	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	बेशक आप	अलबत्ता ग़लती में हैं अपनी

ع ۱۱

الْقَدِيْمِ ﴿95﴾	فَلَمَّآ	اَنْ	جَآءَ	الْبَشِيْرُ	اَلْقٰىهُ	عَلٰى	وَجْهِهٖ
पुरानी	फिर जब	ये कि	आ गया	ख़ुशख़बरी देने वाला	उसने डाला उसे	ऊपर	उसके चेहरे के

فَارْتَدَّ	بَصِيْرًا ۚ	قَالَ	اَلَمْ	اَقُلْ	لَّكُمْ ۚ	اِنِّيْٓ	اَعْلَمُ
तो हो गया वो	देखने वाला	उसने कहा	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम्हें	बेशक मैं	मैं जानता हूं

مِنَ اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿96﴾	قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	اسْتَغْفِرْ	لَنَا
अल्लाह की तरफ़ से	जो	नहीं तुम जानते	उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	बख़्शिश मांगिए	हमारे लिए

ذُنُوْبَنَآ	اِنَّا	كُنَّا	خٰطِـِٕيْنَ ﴿97﴾	قَالَ	سَوْفَ	اَسْتَغْفِرُ	لَكُمْ
हमारे गुनाहों की	बेशक हम	थे हम ही	ख़ताकार	कहा	ज़रूर	मैं बख़्शिश मागूंगा	तुम्हारे लिए

رَبِّيْ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ﴿98﴾	فَلَمَّا	دَخَلُوْا	عَلٰى
अपने रब से	बेशक वो	वो ही है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	फिर जब	वो दाख़िल हुए	ऊपर

يُوْسُفَ	اٰوٰٓى	اِلَيْهِ	اَبَوَيْهِ	وَقَالَ	ادْخُلُوْا	مِصْرَ	اِنْ
यूसुफ़ के	उसने ठिकाना दिया	अपनी तरफ़	अपने वालिदैन को	और कहा	दाख़िल हो जाओ	मिस्र में	अगर

شَآءَ	اللّٰهُ	اٰمِنِيْنَ ﴿99﴾ ؕ	وَرَفَعَ	اَبَوَيْهِ	عَلَى الْعَرْشِ	وَخَرُّوْا
चाहा	अल्लाह ने	अमन वाले होकर	और ऊपर बिठाया	अपने वालिदैन को	तख़्त पर	और वो सब गिर पड़े

لَهٗ	سُجَّدًا ۚ	وَقَالَ	يٰٓاَبَتِ	هٰذَا	تَاْوِيْلُ	رُءْيَايَ
उसके लिए	सज्दा करते हुए	और कहा	ऐ मेरे अब्बा जान	ये है	ताबीर	मेरे ख़्वाब की

مِنْ قَبْلُ ۙ	قَدْ	جَعَلَهَا	رَبِّيْ	حَقًّا ؕ	وَقَدْ	اَحْسَنَ	بِيْٓ
पहले की	तहक़ीक़	कर दिया उसे	मेरे रब ने	सच्चा	और तहक़ीक़	उसने एहसान किया	साथ मेरे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِذْ	اَخْرَجَنِيْ	مِنَ السِّجْنِ	وَجَآءَ	بِكُمْ	مِّنَ الْبَدْوِ	مِنْۢ بَعْدِ
जब	उसने निकाला मुझे	क़ैद ख़ाने से	और वो ले आया	तुम्हें	सेहरा से	बाद इसके

اَنْ	نَّزَغَ	الشَّيْطٰنُ	بَيْنِيْ	وَبَيْنَ	اِخْوَتِيْ ؕ	اِنَّ	رَبِّيْ
कि	फ़साद डाला	शैतान ने	दर्मियान मेरे	और दर्मियान	मेरे भाईयों के	बेशक	रब मेरा

لَطِيْفٌ	لِّمَا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ ﴿100﴾
बेहतरीन तदबीर करने वाला है	उसकी जो	वो चाहता है	बेशक वो	वो ही है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला

رَبِّ	قَدْ	اٰتَيْتَنِيْ	مِنَ الْمُلْكِ	وَعَلَّمْتَنِيْ	مِنْ تَاْوِيْلِ
ऐ मेरे रब	तहक़ीक़	दिया तूने मुझे	बादशाहत में से	और सिखाया तूने मुझे	हक़ीक़त में से

الْاَحَادِيْثِ ۚ	فَاطِرَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ۘ	اَنْتَ	وَلِيّٖ
बातों की	ऐ पैदा करने वाले	आसमानों	और ज़मीन के	तू ही	मेरा दोस्त है

فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ۚ	تَوَفَّنِيْ	مُسْلِمًا	وَّاَلْحِقْنِيْ	بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿101﴾
दुनिया में	और आख़िरत में	तू फ़ौत करना मुझे	मुसलमान	और मिला देना मुझे	सालेहीन से

ذٰلِكَ	مِنْ اَنْۢبَآءِ	الْغَيْبِ	نُوْحِيْهِ	اِلَيْكَ ۚ	وَمَا	كُنْتَ	لَدَيْهِمْ
ये	कुछ ख़बरें हैं	ग़ैब की	हम वही करते हैं उसे	तरफ़ आपके	और ना	थे आप	पास उनके

اِذْ	اَجْمَعُوْٓا	اَمْرَهُمْ	وَهُمْ	يَمْكُرُوْنَ ﴿102﴾	وَمَآ	اَكْثَرُ	النَّاسِ
जब	उन्होंने इत्तिफ़ाक़ किया	अपने मामले पर	और वो	वो चालें चल रहे थे	और नहीं	अक्सर	लोग

وَلَوْ	حَرَصْتَ	بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾	وَمَا	تَسْـَٔلُهُمْ	عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ ؕ
और अगरचे	हिरस करें आप	ईमान लाने वाले	और नहीं	आप सवाल करते उनसे	इस पर	किसी अज्र का

اِنْ	هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٌ	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿104﴾ ع	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ اٰيَةٍ	فِي السَّمٰوٰتِ
नहीं है	वो	मगर	एक ज़िक्र	तमाम जहान वालों के लिए	और कितनी ही	निशानियां हैं	आसमानों में

ع 11 11 5

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاَرْضِ	يَمُرُّوْنَ	عَلَيْهَا	وَهُمْ	عَنْهَا	مُعْرِضُوْنَ (105)	وَمَا
और ज़मीन में	वो गुज़रते हैं	उन पर	और वो	उन से	ऐराज़ करने वाले हैं	और नहीं

يُؤْمِنُ	اَكْثَرُهُمْ	بِاللّٰهِ	اِلَّا	وَهُمْ	مُّشْرِكُوْنَ (106)	اَفَاَمِنُوْٓا
ईमान लाते	अक्सर उनके	अल्लाह पर	मगर	इस हाल में कि वो	मुशरिक हैं	क्या भला वो अमन में आ गए

اَنْ	تَاْتِيَهُمْ	غَاشِيَةٌ	مِّنْ عَذَابِ	اللّٰهِ	اَوْ	تَاْتِيَهُمُ
कि	आ जाए उनके पास	एक छा जाने वाली (आफ़त)	अज़ाब से	अल्लाह के	या	आ जाए उनके पास

السَّاعَةُ	بَغْتَةً	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ (107)	قُلْ	هٰذِهٖ	سَبِيْلِيْٓ
क़यामत	अचानक	और वो	ना वो शऊर रखते हों	कह दीजिए	ये है	रास्ता मेरा

اَدْعُوْٓا	اِلَى اللّٰهِ ۚ قف	عَلٰى بَصِيْرَةٍ	اَنَا	وَمَنِ	اتَّبَعَنِيْ ؕ	وَسُبْحٰنَ
मैं बुलाता हूं	तरफ़ अल्लाह के	बसीरत पर	मैं	और जो कोई	पैरवी करे मेरी	और पाक है

وقف النبي عليه السلام

اللّٰهِ	وَمَآ	اَنَا	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (108)	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	اِلَّا
अल्लाह	और नहीं	मैं	शिर्क करने वालों में से	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	मगर

رِجَالًا	نُّوْحِيْٓ	اِلَيْهِمْ	مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ	اَفَلَمْ	يَسِيْرُوْا
मर्दों को	हम वही करते थे	तरफ़ उनके	बस्ती वालों में से	क्या फिर नहीं	वो चले फिरे

فِي الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
ज़मीन में	तो वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम	उनका जो	इनसे पहले थे

وَلَدَارُ	الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	اتَّقَوْا ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ (109)
और अलबत्ता घर	आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	तक़वा करें	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते

حَتّٰٓى	اِذَا	اسْتَيْئَسَ	الرُّسُلُ	وَظَنُّوْٓا	اَنَّهُمْ	قَدْ	كُذِبُوْا
यहां तक कि	जब	ना उम्मीद हो गए	रसूल	और उन्होंने समझा	कि बेशक वो	यक़ीनन	वो झूठ बोले गए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَآءَهُمْ	نَصْرُنَا	فَنُجِّيَ	مَنْ	نَّشَآءُ ؕ	وَلَا	يُرَدُّ	بَاْسُنَا
आ गई उनके पास	मदद हमारी	तो बचा लिया गया	उसको जिसे	हम चाहते थे	और नहीं	फेरा जाता	अज़ाब हमारा

عَنِ الْقَوْمِ	الْمُجْرِمِيْنَ ﴿110﴾	لَقَدْ	كَانَ	فِيْ قَصَصِهِمْ	عِبْرَةٌ
उन लोगों से	जो मुजरिम हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	है	इनके क़िस्सों में	इब्रत

لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ؕ	مَا	كَانَ	حَدِيْثًا	يُّفْتَرٰى	وَلٰكِنْ
अक़्ल वालों के लिए	नहीं	है ये	ऐसी बात	जो गढ़ ली गई	और लेकिन

تَصْدِيْقَ	الَّذِيْ	بَيْنَ يَدَيْهِ	وَتَفْصِيْلَ	كُلِّ
तस्दीक़	उस चीज़ की जो	उससे पहले है	और तफ़सील है	हर

شَيْءٍ	وَّهُدًى	وَّرَحْمَةً	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿111﴾ ع
चीज़ की	और हिदायत	और रहमत है	उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हों

ع 12 7 6

13 سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ 96

اٰيَاتُهَا: 43 | رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ ۚ	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ ؕ	وَالَّذِيْٓ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ
अलिफ़ लाम मीम रा	ये	आयात हैं	किताब की	और जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके

مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿1﴾	اَللّٰهُ
आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो ईमान लाते	अल्लाह

الَّذِيْ	رَفَعَ	السَّمٰوٰتِ	بِغَيْرِ	عَمَدٍ	تَرَوْنَهَا	ثُمَّ	اسْتَوٰى
वही है जिसने	बुलंद किया	आसमानों को	बग़ैर	सुतूनों के	तुम देखते हो जिन्हें	फिर	वो बुलंद हुआ

عَلَى الْعَرْشِ	وَسَخَّرَ	الشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ؕ	كُلٌّ	يَّجْرِيْ	لِاَجَلٍ
अर्श पर	और उसने मुसख़्ख़र किया	सूरज	और चांद को	सब	चल रहे हैं	एक वक़्त तक

© AL-MUSTAFA WELFARE FOUNDATION

رَبِّكُمْ	بِلِقَآءِ	لَعَلَّكُمْ	الْاٰيٰتِ	يُفَصِّلُ	الْاَمْرَ	يُدَبِّرُ	مُّسَمًّى ؕ
अपने रब की	मुलाक़ात का	ताकि तुम	आयात को	वो खोलकर बयान करता है	काम की	वो तदबीर करता है	मुक़र्रर

رَوَاسِيَ	فِيْهَا	وَجَعَلَ	الْاَرْضَ	مَدَّ	الَّذِيْ	وَهُوَ	تُوْقِنُوْنَ ②
पहाड़	उसमें	और बनाए	ज़मीन को	फैला दिया	जिसने	और वो ही है	तुम यक़ीन करो

اثْنَيْنِ	زَوْجَيْنِ	فِيْهَا	جَعَلَ	الثَّمَرٰتِ	وَمِنْ كُلِّ	وَاَنْهٰرًا ؕ
दो-दो	जोड़े	उसमें	उसने बनाए	फलों की	और हर क़िस्म से	और नहरें

يَّتَفَكَّرُوْنَ ③	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	النَّهَارَ ؕ	الَّيْلَ	يُغْشِي
जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उसमें	बेशक	दिन पर	रात को	वो ढांपता है

وَّزَرْعٌ	مِّنْ اَعْنَابٍ	وَّجَنّٰتٌ	مُّتَجٰوِرٰتٌ	قِطَعٌ	وَفِي الْاَرْضِ
और खेतियां	अंगूरों के	और बाग़ात हैं	बाहम मिले हुए	टुकड़े हैं	और ज़मीन में

وَّاحِدٍ قف	بِمَآءٍ	يُّسْقٰى	صِنْوَانٍ	وَّغَيْرُ	صِنْوَانٌ	وَّنَخِيْلٌ
एक ही	पानी	वो पिलाए जाते हैं	जड़ से मिले हुए	और बग़ैर	जड़ से मिले हुए	और खजूर के दरख़्त

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	فِي الْاُكُلِ ؕ	عَلٰى بَعْضٍ	بَعْضَهَا	وَنُفَضِّلُ
इसमें	यक़ीनन	फलों में	बाज़ पर	उनके बाज़ को	और हम फ़ज़ीलत देते हैं

قَوْلُهُمْ	فَعَجَبٌ	تَعْجَبْ	وَاِنْ	يَّعْقِلُوْنَ ④	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ
बात उनकी	तो क़ाबिले ताअज्जुब है	तुम ताअज्जुब करते हो	और अगर	जो अक़्ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं

اُولٰٓئِكَ	جَدِيْدٍ ۬ؕ	لَفِيْ خَلْقٍ	ءَاِنَّا	تُرٰبًا	كُنَّا	ءَاِذَا
यही वो लोग हैं	नई	अलबत्ता पैदाइश में होंगे	क्या बेशक हम	मिट्टी	हो जाएंगे हम	क्या जब

فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ج	الْاَغْلٰلُ	وَاُولٰٓئِكَ	بِرَبِّهِمْ ج	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ
जिनकी गर्दनों में	तौक़ होंगे	और यही लोग हैं	अपने रब के साथ	कुफ़्र किया	जिन्होंने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ⑤	وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ
यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और वो जल्दी मांगते हैं आपसे

بِالسَّيِّئَةِ	قَبْلَ	الْحَسَنَةِ	وَقَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِمُ	الْمَثُلٰتُ ؕ
बुराई (अज़ाब) को	पहले	भलाई से	हालांकि तहक़ीक़	गुज़र चुकीं	उनसे पहले	इब्रतनाक मिसालें

وَ اِنَّ	رَبَّكَ	لَذُوْ مَغْفِرَةٍ	لِّلنَّاسِ	عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ	وَ اِنَّ	رَبَّكَ
और बेशक	रब आपका	अलबत्ता बख़्शिश वाला है	लोगों के लिए	बावजूद उनके ज़ुल्म के	और बेशक	रब आपका

لَشَدِيْدُ	الْعِقَابِ ⑥	وَ يَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ
अलबत्ता सख़्त	सज़ा वाला है	और कहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	क्यों नहीं	उतारी गई

عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُنْذِرٌ	وَّ لِكُلِّ	قَوْمٍ
उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	बेशक	आप तो	डराने वाले हैं	और वास्ते हर	क़ौम के

هَادٍ ⑦ ع	اَللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	تَحْمِلُ	كُلُّ	اُنْثٰى	وَمَا	تَغِيْضُ
एक हादी है	अल्लाह	जानता है	जो कुछ	उठाती है	हर	मादा	और जो कुछ	कमी करते हैं

ع 1/7/7

الْاَرْحَامُ	وَمَا	تَزْدَادُ ؕ	وَ كُلُّ	شَيْءٍ	عِنْدَهٗ	بِمِقْدَارٍ ⑧
रहम	और जो कुछ	वो ज़्यादा करते हैं	और हर	चीज़	उसके पास	साथ एक अंदाज़े के है

عٰلِمُ	الْغَيْبِ	وَالشَّهَادَةِ	الْكَبِيْرُ	الْمُتَعَالِ ⑨	سَوَآءٌ	مِّنْكُمْ
जानने वाला है	ग़ैब	और हाज़िर का	सबसे बड़ा है	बहुत बुलंद है	यकसां/बराबर है	तुम में से

مَّنْ	اَسَرَّ	الْقَوْلَ	وَمَنْ	جَهَرَ	بِهٖ	وَمَنْ	هُوَ	مُسْتَخْفٍ
जो	छुपा कर करे	बात को	और जो कोई	ज़ाहिर करे	उसे	और जो कोई कि	वो	छुपने वाला है

بِالَّيْلِ	وَسَارِبٌ	بِالنَّهَارِ ⑩	لَهٗ	مُعَقِّبٰتٌ	مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
रात को	और चलने वाला है	दिन को	उसके लिए	पहरेदार हैं	उसके सामने से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمِنْ خَلْفِهٖ	يَحْفَظُوْنَهٗ	مِنْ اَمْرِ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُغَيِّرُ
और उसके पीछे से	जो हिफ़ाज़त करते हैं उसकी	हुक्म से	अल्लाह के	बेशक	अल्लाह	नहीं तबदील करता

مَا	بِقَوْمٍ	حَتّٰى	يُغَيِّرُوْا	مَا	بِاَنْفُسِهِمْ ؕ	وَاِذَآ	اَرَادَ
जो	किसी क़ौम में है	यहां तक कि	वो बदल दें	उसको जो	उनके दिलों में है	और जब	इरादा करता है

اللّٰهُ	بِقَوْمٍ	سُوْٓءًا	فَلَا	مَرَدَّ	لَهٗ ۚ	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ دُوْنِهٖ
अल्लाह	साथ किसी क़ौम के	किसी बुराई का	तो नहीं	कोई फेरने वाला	उसे	और नहीं	उनके लिए	उसके सिवा

مِنْ وَّالٍ ⑪	هُوَ	الَّذِيْ	يُرِيْكُمُ	الْبَرْقَ	خَوْفًا	وَّطَمَعًا	وَّيُنْشِئُ
कोई मददगार	वो ही है	जो	दिखाता है तुम्हें	बिजली की चमक	ख़ौफ़	और उम्मीद से	और वो उठाता है

السَّحَابَ	الثِّقَالَ ⑫ ۚ	وَيُسَبِّحُ	الرَّعْدُ	بِحَمْدِهٖ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ
बादल	बोझल	और तस्बीह करती है	कड़क	साथ उसकी तारीफ़ के	और फ़रिश्ते

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ	وَيُرْسِلُ	الصَّوَاعِقَ	فَيُصِيْبُ	بِهَا	مَنْ	يَّشَآءُ
उसके ख़ौफ़ से	और वो भेजता है	कड़कती बिजलियों को	फिर वो पहुंचाता है	उन्हें	जिस पर	वो चाहता है

وَهُمْ	يُجَادِلُوْنَ	فِى اللّٰهِ ۚ	وَهُوَ	شَدِيْدُ	الْمِحَالِ ⑬ ؕ	لَهٗ
हालांकि वो	वो झगड़ रहे होते हैं	अल्लाह के बारे में	और वो	सख़्त	क़ुव्वत वाला है	उसी के लिए है

دَعْوَةُ	الْحَقِّ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ	لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ
पुकारना	बरहक़	और जिन्हें	वो पुकारते हैं	उसके सिवा	नहीं वो जवाब देते

لَهُمْ	بِشَيْءٍ	اِلَّا	كَبَاسِطِ	كَفَّيْهِ	اِلَى الْمَآءِ	لِيَبْلُغَ	فَاهُ
उनको	कुछ भी	मगर	मानिंद फैलाने वाले के	अपनी दोनों हथेलियां	तरफ़ पानी के	ताकि वो पहुंचे	उसके मुंह को

وَمَا	هُوَ	بِبَالِغِهٖ ؕ	وَمَا	دُعَآءُ	الْكٰفِرِيْنَ	اِلَّا	فِىْ ضَلٰلٍ ⑭
और नहीं	वो	पहुंचने वाला उसे	और नहीं	दुआ	काफ़िरों की	मगर	गुमराही में

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلِلّٰهِ	يَسْجُدُ	مَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	طَوْعًا	وَّكَرْهًا
और अल्लाह ही के लिए	सज्दा करता है	जो कोई	आसमानों में	और ज़मीन में है	ख़ुशी से	और नाख़ुशी से

السجدة 2

وَّظِلٰلُهُمْ	بِالْغُدُوِّ	وَالْاٰصَالِ ۩ 15	قُلْ	مَنْ	رَّبُّ	السَّمٰوٰتِ
और साए उनके	सुबह	और शाम	कह दीजिए	कौन है	रब	आसमानों

وَالْاَرْضِ ط	قُلِ	اللّٰهُ ط	قُلْ	اَفَاتَّخَذْتُمْ	مِّنْ دُوْنِهٖٓ	اَوْلِيَآءَ
और ज़मीन का	कह दीजिए	अल्लाह	कह दीजिए	क्या फिर (भी) बना लिए तुमने	उसके सिवा	हिमायती

لَا يَمْلِكُوْنَ	لِاَنْفُسِهِمْ	نَفْعًا	وَّلَا	ضَرًّا ط	قُلْ	هَلْ	يَسْتَوِي
नहीं वो मालिक हो सकते	अपने नफ़्सों के लिए	किसी नफ़ा के	और ना	किसी नुक़्सान के	कह दीजिए	क्या	बराबर हो सकता है

الْاَعْمٰى	وَالْبَصِيْرُ ۵	اَمْ	هَلْ	تَسْتَوِي	الظُّلُمٰتُ	وَالنُّوْرُ ۵ ج	اَمْ
अंधा	और देखने वाला	या	क्या	बराबर हो सकते हैं	अंधेरे	और रोशनी	या

جَعَلُوْا	لِلّٰهِ	شُرَكَآءَ	خَلَقُوْا	كَخَلْقِهٖ	فَتَشَابَهَ	الْخَلْقُ
उन्होंने बना लिए	अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	उन्होंने पैदा किया	मानिंद उसकी तख़्लीक़ के	तो मुश्तबा हो गई	पैदाइश

عَلَيْهِمْ ط	قُلِ	اللّٰهُ	خَالِقُ	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّهُوَ	الْوَاحِدُ	الْقَهَّارُ 16
उन पर	कह दीजिए	अल्लाह	ख़ालिक़ है	हर	चीज़ का	और वो ही	अकेला है	बहुत ज़बरदस्त है

اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَسَالَتْ	اَوْدِيَةٌۢ	بِقَدَرِهَا	فَاحْتَمَلَ
उसने उतारा	आसमान से	पानी	तो बह निकलीं	वादियां	अपने-अपने अंदाज़े से	तो उठा लिया

السَّيْلُ	زَبَدًا	رَّابِيًا ط	وَمِمَّا	يُوْقِدُوْنَ	عَلَيْهِ	فِي النَّارِ
सैलाब ने	झाग	चढ़ा हुआ	और उसमें से जो	वो जलाते हैं	उस पर	आग में

ابْتِغَآءَ	حِلْيَةٍ	اَوْ	مَتَاعٍ	زَبَدٌ	مِّثْلُهٗ ط	كَذٰلِكَ	يَضْرِبُ
हासिल करने को	ज़ेवर	या	बर्तन	झाग है	उस जैसा	इसी तरह	बयान करता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهُ	الْحَقَّ	وَالْبَاطِلَ ؕ	فَاَمَّا	الزَّبَدُ	فَيَذْهَبُ	جُفَآءً ۚ	وَ اَمَّا
अल्लाह	हक़	और बातिल को	तो रहा	झाग	तो वो चला जाता है	नाकारा हो कर	और लेकिन

مَا	يَنْفَعُ	النَّاسَ	فَيَمْكُثُ	فِى الْاَرْضِ ؕ	كَذٰلِكَ	يَضْرِبُ	اللّٰهُ
जो	नफ़ा देता है	लोगों को	तो वो ठहर जाता है	ज़मीन में	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह

الْاَمْثَالَ ؕ ⑰	لِلَّذِيْنَ	اسْتَجَابُوْا	لِرَبِّهِمُ	الْحُسْنٰى ؕ	وَالَّذِيْنَ
मिसालें	उन लोगों के लिए जिन्होंने	क़ुबूल किया (हुक्म)	अपने रब का	भलाई है	और जिन लोगों ने

لَمْ	يَسْتَجِيْبُوْا	لَهٗ	لَوْ	اَنَّ	لَهُمْ	مَّا	فِى الْاَرْضِ	جَمِيْعًا
नहीं	क़ुबूल किया	उसे	काश	कि (होता)	उनके लिए	जो कुछ	ज़मीन में है	सबका सब

وَّمِثْلَهٗ	مَعَهٗ	لَافْتَدَوْا	بِهٖ ؕ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	سُوْٓءُ
और उसकी मानिंद	साथ उसके	अलबत्ता वो फ़िदये में दे देते	उसको	यही लोग हैं	उनके लिए है	बुरा

الْحِسَابِ ۙ	وَمَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ؕ	وَبِئْسَ	الْمِهَادُ ⑱ ع	اَفَمَنْ	يَّعْلَمُ
हिसाब	और ठिकाना उनका	जहन्नम है	और वो बहुत ही बुरा	ठिकाना है	क्या फिर जो	जानता है

اَنَّمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	كَمَنْ	هُوَ	اَعْمٰى ؕ
कि बेशक जो	उतारा गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	उसकी मानिंद है जो	वो	अंधा है

اِنَّمَا	يَتَذَكَّرُ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑲ ۙ	الَّذِيْنَ	يُوْفُوْنَ	بِعَهْدِ اللّٰهِ
बेशक	नसीहत पकड़ते हैं	अक़्ल वाले	वो लोग जो	पूरा करते हैं	अल्लाह के अहद को

وَلَا	يَنْقُضُوْنَ	الْمِيْثَاقَ ⑳ ۙ	وَالَّذِيْنَ	يَصِلُوْنَ	مَآ	اَمَرَ	اللّٰهُ
और नहीं	वो तोड़ते	पुख़्ता वादे को	और वो जो	जोड़ते हैं	उसको जो	हुक्म दिया	अल्लाह ने

بِهٖٓ	اَنْ	يُّوْصَلَ	وَيَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ	وَيَخَافُوْنَ	سُوْٓءَ
जिसका	कि	वो जोड़ा जाए	और वो डरते हैं	अपने रब से	और वो डरते हैं	बुरे

وقف النبی علیہ السلام

ع 2 11 8 النصف

الْحِسَابِ ﴿21﴾ ط	وَالَّذِيْنَ	صَبَرُوا	ابْتِغَآءَ	وَجْهِ	رَبِّهِمْ	وَاَقَامُوا
हिसाब से	और वो जिन्होंने	सब्र किया	चाहने के लिए	चेहरा	अपने रब का	और क़ायम की

الصَّلٰوةَ	وَاَنْفَقُوْا	مِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	سِرًّا	وَّعَلَانِيَةً	وَّيَدْرَءُوْنَ
नमाज़	और ख़र्च किया	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	पोशीदा	और ज़ाहिर	और वो दूर करते हैं

بِالْحَسَنَةِ	السَّيِّئَةَ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿22﴾ لا	جَنّٰتُ
साथ भलाई के	बुराई को	यही लोग हैं	उनके लिए है	अंजाम	घर का (आख़िरत के)	बाग़ात हैं

عَدْنٍ	يَّدْخُلُوْنَهَا	وَمَنْ	صَلَحَ	مِنْ اٰبَآئِهِمْ	وَاَزْوَاجِهِمْ
हमेशगी के	वो दाख़िल होंगे उन में	और जो कोई	नेक हुआ	उनके आबा ओ अजदाद में से	और उनकी बीवियों में से

وَذُرِّيّٰتِهِمْ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ	يَدْخُلُوْنَ	عَلَيْهِمْ	مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿23﴾ ج	سَلٰمٌ
और उनकी औलाद में से	और फ़रिश्ते	वो दाख़िल होंगे	उन पर	हर दरवाज़े से	सलाम हो

عَلَيْكُمْ	بِمَا	صَبَرْتُمْ	فَنِعْمَ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿24﴾ ط	وَالَّذِيْنَ
तुम पर	बवजह उसके जो	सब्र किया तुमने	तो कितना अच्छा है	अंजाम	(आख़िरत के) घर का	और वो लोग जो

يَنْقُضُوْنَ	عَهْدَ	اللّٰهِ	مِنْ بَعْدِ	مِيْثَاقِهٖ	وَيَقْطَعُوْنَ	مَآ
तोड़ते हैं	अहद को	अल्लाह के	बाद	उसके पक्का करने के	और वो काटते हैं	उसको जो

اَمَرَ	اللّٰهُ	بِهٖٓ	اَنْ	يُّوْصَلَ	وَيُفْسِدُوْنَ	فِي الْاَرْضِ لا	اُولٰٓئِكَ
हुक्म दिया	अल्लाह ने	जिसका	कि	वो जोड़ा जाए	और वो फ़साद करते हैं	ज़मीन में	यही लोग हैं

لَهُمْ	اللَّعْنَةُ	وَلَهُمْ	سُوْٓءُ	الدَّارِ ﴿25﴾	اَللّٰهُ	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ
उनके लिए है	लानत	और उन्हीं के लिए है	बुरा	घर	अल्लाह	फैलाता है	रिज़्क़ को

لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ ط	وَفَرِحُوْا	بِالْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ط	وَمَا
जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	और वो ख़ुश हो गए	ज़िंदगी पर	दुनिया की	और नहीं

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 3 8 9

الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	فِي الْاٰخِرَةِ	اِلَّا	مَتَاعٌ ﴿26﴾ ع	وَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ
ज़िंदगी	दुनिया की	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	मगर	एक मताअ (हक़ीर)	और कहते हैं	वो लोग जिन्होंने

كَفَرُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	قُلْ	اِنَّ
कुफ़्र किया	क्यों नहीं	उतारी गई	उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	कह दीजिए	बेशक

اللّٰهَ	يُضِلُّ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْٓ	اِلَيْهِ	مَنْ	اَنَابَ ﴿27﴾ ۖۚ
अल्लाह	भटकाता है	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	अपनी तरफ़	उसे जो	रुजूअ करे

اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَتَطْمَئِنُّ	قُلُوْبُهُمْ	بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ	اَلَا	بِذِكْرِ اللّٰهِ
वो लोग जो	ईमान लाए	और मुत्मइन होते हैं	दिल उनके	अल्लाह के ज़िक्र से	ख़बरदार	अल्लाह के ज़िक्र से

تَطْمَئِنُّ	الْقُلُوْبُ ﴿28﴾ ؕ	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	طُوْبٰى
मुत्मइन हो जाते हैं	दिल	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	ख़ुशहाली है

لَهُمْ	وَحُسْنُ	مَاٰبٍ ﴿29﴾	كَذٰلِكَ	اَرْسَلْنٰكَ	فِيْٓ اُمَّةٍ	قَدْ
उनके लिए	और उम्दा	ठिकाना	इसी तरह	भेजा हमने आपको	इस उम्मत में	तहक़ीक़

خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهَآ	اُمَمٌ	لِّتَتْلُوَا۟	عَلَيْهِمُ	الَّذِيْٓ	اَوْحَيْنَآ
गुज़र चुकीं	इससे पहले	कई उम्मतें	ताकि आप पढ़ें	उन पर	वो जो	वही की हमने

اِلَيْكَ	وَهُمْ	يَكْفُرُوْنَ	بِالرَّحْمٰنِ ؕ	قُلْ	هُوَ	رَبِّيْ	لَآ
तरफ़ आपके	और वो	वो कुफ़्र करते हैं	रहमान का	कह दीजिए	वो	रब है मेरा	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۚ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ	وَاِلَيْهِ	مَتَابِ ﴿30﴾	وَلَوْ
कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	उसी पर	तवक्कल किया मैंने	और तरफ़ उसी के	लौटना है मेरा	और अगर

اَنَّ	قُرْاٰنًا	سُيِّرَتْ	بِهِ	الْجِبَالُ	اَوْ	قُطِّعَتْ	بِهِ
यक़ीनन	क़ुरआन होता	(कि) चलाए जाते	उसके ज़रिए	पहाड़	या	फाड़ दी जाती	उसके ज़रिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاَرْضُ	اَوْ	كُلِّمَ	بِهِ	الْمَوْتٰى ط	بَلْ	لِّلّٰهِ	الْاَمْرُ	جَمِيْعًا ط
ज़मीन	या	कलाम किया जाता	उसके ज़रिए	मुर्दों से	बल्कि	अल्लाह ही के लिए है	मामला	सारे का सारा

اَفَلَمْ	يَايْـَٔسِ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَنْ	لَّوْ	يَشَآءُ	اللّٰهُ
क्या भला नहीं	मायूस हो गए	वो लोग जो	ईमान लाए	कि	अगर	चाहता	अल्लाह

لَهَدَى	النَّاسَ	جَمِيْعًا ط	وَلَا يَزَالُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	تُصِيْبُهُمْ
अलबत्ता वो हिदायत दे देता	लोगों को	सबके सबको	और हमेशा रहेंगे	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	पहुंचती रहेगी उन्हें

بِمَا	صَنَعُوْا	قَارِعَةٌ	اَوْ	تَحُلُّ	قَرِيْبًا	مِّنْ دَارِهِمْ	حَتّٰى
बवजह उसके जो	उन्होंने किया	कोई आफ़त	या	वो उतरती रहेगी	क़रीब ही	उनके घर के	यहां तक कि

ع 4 5 10

يَاْتِيَ	وَعْدُ	اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُخْلِفُ	الْمِيْعَادَ (31) ع	وَلَقَدِ
आ जाए	वादा	अल्लाह का	बेशक	अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता	वादे के	और अलबत्ता तहक़ीक़

اسْتُهْزِئَ	بِرُسُلٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	فَاَمْلَيْتُ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	ثُمَّ
मज़ाक़ उड़ाया गया	कई रसूलों का	आपसे क़ब्ल	तो ढील दी मैंने	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	फिर

اَخَذْتُهُمْ قف	فَكَيْفَ	كَانَ	عِقَابِ (32)	اَفَمَنْ	هُوَ	قَآئِمٌ	عَلٰى
पकड़ लिया मैंने उन्हें	तो कैसी	थी	सज़ा मेरी	क्या भला जो	वो	क़ायम/निगरान है	ऊपर

كُلِّ	نَفْسٍۭ	بِمَا	كَسَبَتْ ج	وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	شُرَكَآءَ ط	قُلْ
हर	नफ़्स के	साथ उसके जो	उसने कमाई की	और उन्होंने बना रखे हैं	अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	कह दीजिए

سَمُّوْهُمْ ط	اَمْ	تُنَبِّئُوْنَهٗ	بِمَا	لَا يَعْلَمُ	فِي الْاَرْضِ	اَمْ
नाम लो उनके	क्या	तुम ख़बर दे रहे हो उसे	उसकी जो	नहीं वो जानता	ज़मीन में	या

بِظَاهِرٍ	مِّنَ الْقَوْلِ ط	بَلْ	زُيِّنَ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مَكْرُهُمْ
बज़ाहिर	बात से	बल्कि	मुज़य्यन कर दी गई	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	चाल उनकी

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَصُدُّوْا	عَنِ السَّبِيْلِ ؕ	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ
और वो रोक दिए गए	रास्ते से	और जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए

مِنْ هَادٍ ﴿33﴾	لَهُمْ	عَذَابٌ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ
कोई हिदायत देने वाला	उनके लिए	अज़ाब है	ज़िंदगी में	दुनिया की	और अलबत्ता अज़ाब	आख़िरत का

اَشَقُّ ۚ	وَمَا	لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ وَّاقٍ ﴿34﴾	مَثَلُ	الْجَنَّةِ	الَّتِيْ
ज़्यादा सख़्त है	और नहीं	उनके लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	मिसाल	उस जन्नत की	जिस का

وُعِدَ	الْمُتَّقُوْنَ ؕ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ؕ	اُكُلُهَا	دَآئِمٌ
वादा किए गए	मुत्तक़ी लोग	बहती हैं	उसके नीचे से	नहरें	फल उसके	दायमी हैं

وَّظِلُّهَا ؕ	تِلْكَ	عُقْبَى	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا ۟	وَّعُقْبَى	الْكٰفِرِيْنَ
और उसका साया (भी)	ये	अंजाम है	उन लोगों का जिन्होंने	तक़वा किया	और अंजाम	काफ़िरों का

النَّارُ ﴿35﴾	وَالَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ	الْكِتٰبَ	يَفْرَحُوْنَ	بِمَآ	اُنْزِلَ
आग है	और वो लोग जो	दी हमने उन्हें	किताब	वो ख़ुश होते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْكَ	وَمِنَ الْاَحْزَابِ	مَنْ	يُّنْكِرُ	بَعْضَهٗ ؕ	قُلْ	اِنَّمَآ
तरफ़ आपके	और कुछ गिरोह हैं	जो	इंकार करते हैं	उसके बाज़ का	कह दीजिए	बेशक

اُمِرْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	اللّٰهَ	وَلَآ	اُشْرِكَ	بِهٖ ؕ	اِلَيْهِ
हुक्म दिया गया मुझे	कि	मैं इबादत करूं	अल्लाह की	और ना	मैं शरीक ठहराऊं	साथ उस के	तरफ़ उसी के

اَدْعُوْا	وَاِلَيْهِ	مَاٰبِ ﴿36﴾	وَكَذٰلِكَ	اَنْزَلْنٰهُ	حُكْمًا	عَرَبِيًّا ؕ
मैं बुलाता हूं	और तरफ़ उसी के	लौटना है मेरा	और इसी तरह	नाज़िल किया हमने इसे	हुक्म/फ़रमान	अरबी ज़बान में

وَلَئِنِ	اتَّبَعْتَ	اَهْوَآءَهُمْ	بَعْدَمَا	جَآءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ ۙ
और अलबत्ता अगर	पैरवी की आपने	उनकी ख़्वाहिशात की	बाद उसके जो	आ गया आपके पास	इल्म में से

© QURAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 6 11

اَرْسَلْنَا	وَلَقَدْ	وَّاقٍ ﴿37﴾ ع	وَّلَا	مِنْ وَّلِيٍّ	مِنَ اللّٰهِ	لَكَ	مَا
भेजा हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	कोई बचाने वाला	और ना	कोई दोस्त	अल्लाह की तरफ़ से	आपके लिए	नहीं

وَمَا	وَّذُرِّيَّةً ؕ	اَزْوَاجًا	لَهُمْ	وَجَعَلْنَا	مِّنْ قَبْلِكَ	رُسُلًا
और नहीं	और औलाद	बीवियां	उनके लिए	और बनाईं हमने	आपसे पहले	कई रसूलों को

بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ	اِلَّا	بِاٰيَةٍ	يَّاْتِيَ	اَنْ	لِرَسُوْلٍ	كَانَ
अल्लाह के इज़्न से	मगर	कोई निशानी	वो ले आए	कि	किसी रसूल के लिए	था (मुमकिन)

وَيُثْبِتُ ۚۖ	يَشَآءُ	مَا	اللّٰهُ	يَمْحُوا	كِتَابٌ ﴿38﴾	لِكُلِّ اَجَلٍ
और वो साबित रखता है	वो चाहता है	जो	अल्लाह	मिटाता है	एक किताब है	हर मुद्दत के लिए

الَّذِیْ	بَعْضَ	نُرِيَنَّكَ	وَاِنْ مَّا	اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿39﴾	وَعِنْدَهٗٓ
वो जिसका	बाज़	हम दिखाएं आपको	और अगर	असल किताब	और उसी के पास है

وَعَلَيْنَا	الْبَلٰغُ	عَلَيْكَ	فَاِنَّمَا	نَتَوَفَّيَنَّكَ	اَوْ	نَعِدُهُمْ
और हमारे ज़िम्मे है	पहुंचाना	आपके ज़िम्मे है	तो बेशक	हम फ़ौत कर लें आपको	या	हम वादा करते हैं उनसे

نَنْقُصُهَا	الْاَرْضَ	نَاْتِي	اَنَّا	يَرَوْا	اَوَلَمْ	الْحِسَابُ ﴿40﴾
हम घटा रहे हैं उसे	ज़मीन को	हम आ रहे हैं	बेशक हम	उन्होंने देखा	क्या भला नहीं	हिसाब लेना

سَرِيْعُ	وَهُوَ	لِحُكْمِهٖ ؕ	لَا مُعَقِّبَ	يَحْكُمُ	وَاللّٰهُ	مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ
जल्द लेने वाला है	और वो	उसके फ़ैसले का	नहीं कोई पीछा करने वाला	फ़ैसला करता है	और अल्लाह	उसके किनारों से

الْمَكْرُ	فَلِلّٰهِ	مِنْ قَبْلِهِمْ	الَّذِيْنَ	مَكَرَ	وَقَدْ	الْحِسَابِ ﴿41﴾
तदबीर	तो अल्लाह ही के लिए है	उनसे पहले थे	उन लोगों ने जो	चाल चली	और तहक़ीक़	हिसाब

الْكُفّٰرُ	وَسَيَعْلَمُ	نَفْسٍ ؕ	كُلُّ	تَكْسِبُ	مَا	يَعْلَمُ	جَمِيْعًا ؕ
कुफ़्फ़ार	और अनक़रीब जान लेंगे	नफ़्स	हर	कमाई करता है	जो	वो जानता है	सारी की सारी

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِمَنْ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿42﴾	وَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَسْتَ
किस के लिए	अंजाम है	(आख़िरत के) घर का	और कहते हैं	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं हैं आप

مُرْسَلًا ؕ	قُلْ	كَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا	بَيْنِيْ	وَبَيْنَكُمْ ۙ
रसूल	कह दीजिए	काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे

ع 6 6 12

وَمَنْ	عِنْدَهٗ	عِلْمُ	الْكِتٰبِ ﴿43﴾ ع
और वो (भी) जो	(रखता है) अपने पास	इल्म	किताब का

اٰيَاتُهَا: 52 — 14 سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ 72 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ قف	كِتٰبٌ	اَنْزَلْنٰهُ	اِلَيْكَ	لِتُخْرِجَ	النَّاسَ	مِنَ الظُّلُمٰتِ
الٓرٰ	(ये) एक किताब है	नाज़िल किया हमने उसे	तरफ़ आपके	ताकि आप निकालें	लोगों को	अँधेरों से

اِلَى النُّوْرِ ۙ	بِاِذْنِ	رَبِّهِمْ	اِلٰى صِرَاطِ	الْعَزِيْزِ	الْحَمِيْدِ ﴿1﴾ ۙ
तरफ़ रोशनी के	साथ इज़्न के	उनके रब के	तरफ़ रास्ते	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब तारीफ़ वाले के

اللّٰهِ	الَّذِيْ	لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَوَيْلٌ
अल्लाह के	वो ज़ात	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और हलाकत है

لِّلْكٰفِرِيْنَ	مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿2﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَسْتَحِبُّوْنَ	الْحَيٰوةَ
काफ़िरों के लिए	सख़्त अज़ाब से	वो लोग जो	तरजीह देते हैं	ज़िन्दगी को

الدُّنْيَا	عَلَى الْاٰخِرَةِ	وَيَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَيَبْغُوْنَهَا
दुनिया की	आख़िरत पर	और वो रोकते हैं	अल्लाह के रास्ते से	और वो तलाश करते हैं उसमें

عِوَجًا ؕ	اُولٰٓئِكَ	فِيْ ضَلٰلٍ	بَعِيْدٍ ﴿3﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ رَّسُوْلٍ
टेढ़ापन	यही लोग हैं	गुमराही में	दूर की	और नहीं	भेजा हमने	कोई रसूल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	بِلِسَانِ	قَوْمِهٖ	لِيُبَيِّنَ	لَهُمْ ط	فَيُضِلُّ	اللّٰهُ	مَنْ
मगर	ज़बान में	उसकी क़ौम की	ताकि वो वाज़ेह करे	उनके लिए	पस भटका देता है	अल्लाह	जिसे

يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْ	مَنْ	يَّشَآءُ ط	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ (4)	وَلَقَدْ
वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत हिक्मत वाला है	और अलबत्ता तहक़ीक़

اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى	بِاٰيٰتِنَآ	اَنْ	اَخْرِجْ	قَوْمَكَ	مِنَ الظُّلُمٰتِ
भेजा हमने	मूसा को	साथ अपनी निशानियों के	कि	निकालो	अपनी क़ौम को	अंधेरों से

اِلَى النُّوْرِ ۙ	وَذَكِّرْهُمْ	بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ
तरफ़ रोशनी के	और याद दिलाओ इन्हें	अल्लाह के दिनों की	बेशक	उसमें	अलबत्ता निशानियां हैं

لِّكُلِّ	صَبَّارٍ	شَكُوْرٍ (5)	وَاِذْ	قَالَ	مُوْسٰى	لِقَوْمِهِ	اذْكُرُوْا
वास्ते हर	बहुत सब्र करने वाले	बहुत शुक्र करने वाले के	और जब	कहा	मूसा ने	अपनी क़ौम से	याद करो

نِعْمَةَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	اَنْجٰىكُمْ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَسُوْمُوْنَكُمْ
नेअमत	अल्लाह की	(जो) तुम पर है	जब	उसने निजात दी तुम्हें	आले फ़िरऔन से	वो चखाते थे तुम्हें

سُوْٓءَ	الْعَذَابِ	وَيُذَبِّحُوْنَ	اَبْنَآءَكُمْ	وَيَسْتَحْيُوْنَ	نِسَآءَكُمْ ط
बुरा	अज़ाब	और ज़िबह करते थे	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते थे	तुम्हारी औरतों को

ع 1 6 13

وَفِيْ ذٰلِكُمْ	بَلَآءٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَظِيْمٌ (6) ع	وَاِذْ	تَاَذَّنَ	رَبُّكُمْ
और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	और जब	आगाह कर दिया	तुम्हारे रब ने

لَئِنْ	شَكَرْتُمْ	لَاَزِيْدَنَّكُمْ	وَلَئِنْ	كَفَرْتُمْ	اِنَّ	عَذَابِيْ
अलबत्ता अगर	शुक्र किया तुमने	अलबत्ता मैं ज़रूर ज़्यादा दूंगा तुम्हें	और अलबत्ता अगर	नाशुक्री की तुमने	बेशक	अज़ाब मेरा

لَشَدِيْدٌ (7)	وَقَالَ	مُوْسٰٓى	اِنْ	تَكْفُرُوْٓا	اَنْتُمْ	وَمَنْ	فِي الْاَرْضِ
अलबत्ता सख़्त है	और कहा	मूसा ने	अगर	तुम नाशुक्री करो	तुम	और जो	ज़मीन में है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَمِيْعًا ۙ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَغَنِيٌّ	حَمِيْدٌ ⑧	اَلَمْ	يَاْتِكُمْ	نَبَؤُا
सबके सब	तो बेशक	अल्लाह	अलबत्ता बहुत बेनियाज़ है	बहुत तारीफ़ वाला है	क्या नहीं	आई तुम्हारे पास	ख़बर

ع

الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	قَوْمِ	نُوْحٍ	وَّعَادٍ	وَّثَمُوْدَ ۛ	وَالَّذِيْنَ
उन लोगों की जो	तुम से पहले थे	क़ौम	नूह	और आद	और समूद	और उनकी जो

مِنْ بَعْدِهِمْ ۛ	لَا يَعْلَمُهُمْ	اِلَّا	اللّٰهُ ۭ	جَآءَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ
उनके बाद थे	नहीं जानता उन्हें	मगर	अल्लाह	आए उनके पास	रसूल उनके

بِالْبَيِّنٰتِ	فَرَدُّوْٓا	اَيْدِيَهُمْ	فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ	وَقَالُوْٓا	اِنَّا
साथ वाज़ेह दलाइल के	तो उन्होंने फेर दिया	अपने हाथों को	अपने मुंहों में	और कहा	बेशक हम

كَفَرْنَا	بِمَآ	اُرْسِلْتُمْ	بِهٖ	وَاِنَّا	لَفِيْ شَكٍّ	مِّمَّا
इंकार करते हैं हम	उसका जो	भेजे गए तुम	साथ जिसके	और बेशक हम	अलबत्ता शक में हैं	उस चीज़ से जो

الثلثة

تَدْعُوْنَنَآ	اِلَيْهِ	مُرِيْبٍ ⑨	قَالَتْ	رُسُلُهُمْ	اَفِي اللّٰهِ	شَكٌّ
तुम बुलाते हो हमें	तरफ़ उसके	जो बेचैन करने वाला है	कहा	उनके रसूलों ने	क्या अल्लाह के बारे में	शक है

فَاطِرِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ۭ	يَدْعُوْكُمْ	لِيَغْفِرَ	لَكُمْ
जो पैदा करने वाला है	आसमानों	और ज़मीन का	वो बुलाता है तुम्हें	ताकि वो बख़्श दे	तुम्हारे लिए

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ	وَيُؤَخِّرَكُمْ	اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ	قَالُوْٓا	اِنْ
तुम्हारे गुनाहों को	और वो मोहलत दे तुम्हें	एक मुक़र्रर मुद्दत तक	उन्होंने कहा	नहीं हो

اَنْتُمْ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُنَا ۭ	تُرِيْدُوْنَ	اَنْ	تَصُدُّوْنَا	عَمَّا
तुम	मगर	एक इंसान	हम जैसे	तुम चाहते हो	कि	तुम रोको हमें	उससे जो

كَانَ	يَعْبُدُ	اٰبَآؤُنَا	فَاْتُوْنَا	بِسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ⑩	قَالَتْ
थे	इबादत करते	आबा ओ अजदाद हमारे	पस ले आओ हमारे पास	कोई दलील	वाज़ेह	कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	رُسُلُهُمْ	اِنْ	نَّحْنُ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ	وَلٰكِنَّ
उन्हें	उनके रसूलों ने	नहीं हैं	हम	मगर	एक इन्सान	तुम जैसे	और लेकिन

اللّٰهَ	يَمُنُّ	عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَمَا	كَانَ	لَنَآ
अल्लाह	एहसान करता है	जिस पर	वो चाहता है	अपने बन्दों में से	और नहीं	है (मुमकिन)	हमारे लिए

اَنْ	نَّاْتِيَكُمْ	بِسُلْطٰنٍ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ	وَعَلَى اللّٰهِ
कि	हम ले आऐं तुम्हारे पास	कोई दलील	मगर	अल्लाह के इज़्न से	और अल्लाह ही पर

فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪	وَمَا	لَنَآ	اَلَّا	نَتَوَكَّلَ	عَلَى اللّٰهِ
पस चाहिए कि तवक्कल करें	ईमान लाने वाले	और क्या है	हमें	कि ना	हम तवक्कल करें	अल्लाह पर

وَقَدْ	هَدٰىنَا	سُبُلَنَا ؕ	وَلَنَصْبِرَنَّ	عَلٰى مَآ	اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ
हालांकि तहक़ीक़	हिदायत दी उसने हमें	हमारे रास्तों की	अलबत्ता हम ज़रूर सब्र करेंगे	उस पर जो	अज़ियत दे रहे हो तुम हमें

ع 2 6 14

وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫ ع	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
और अल्लाह ही पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें	तवक्कल करने वाले	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया

لِرُسُلِهِمْ	لَنُخْرِجَنَّكُمْ	مِّنْ اَرْضِنَآ	اَوْ	لَتَعُوْدُنَّ	فِيْ مِلَّتِنَا ؕ
अपने रसूलों को	अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे तुम्हें	अपनी ज़मीन से	या	अलबत्ता तुम ज़रूर लौटोगे	हमारी मिल्लत में

فَاَوْحٰٓى	اِلَيْهِمْ	رَبُّهُمْ	لَنُهْلِكَنَّ	الظّٰلِمِيْنَ ⑬ لا	وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
तो वही की	तरफ़ उनके	उनके रब ने	अलबत्ता हम ज़रूर हलाक कर देंगे	जालिमों को	और अलबत्ता हम ज़रूर आबाद कर देंगे तुम्हें

الْاَرْضَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ	ذٰلِكَ	لِمَنْ	خَافَ	مَقَامِيْ
ज़मीन में	बाद इनके	ये	उसके लिए है जो	डरे	मेरे सामने खड़ा होने से

وَخَافَ	وَعِيْدِ ⑭	وَاسْتَفْتَحُوْا	وَخَابَ	كُلُّ	جَبَّارٍ	عَنِيْدٍ ⑮ لا
और वो डरे	मेरी वईद से	और उन्होंने फ़ैसला चाहा	और नामुराद हुआ	हर	सरकश	अनाद रखने वाला

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ وَّرَآئِهٖ	جَهَنَّمُ	وَيُسْقٰى	مِنْ مَّآءٍ	صَدِيْدٍ ۝16 ۙ	يَّتَجَرَّعُهٗ
उसके आगे	जहन्नम है	और वो पिलाया जाएगा	पानी में से	पीप वाले	वो घूंट-घूंट पियेगा उसे

وَلَا	يَكَادُ	يُسِيْغُهٗ	وَيَاْتِيْهِ	الْمَوْتُ	مِنْ كُلِّ مَكَانٍ	وَّمَا
और नहीं	वो क़रीब होगा	कि वो निगल सके उसे	और आएगी उसके पास	मौत	हर जगह से	और नहीं(होगा)

هُوَ	بِمَيِّتٍ ؕ	وَمِنْ وَّرَآئِهٖ	عَذَابٌ	غَلِيْظٌ ۝17	مَثَلُ	الَّذِيْنَ
वो	मरने वाला	और उसके आगे	अज़ाब है	सख़्त	मिसाल	उन लोगों की जिन्होंने

كَفَرُوْا	بِرَبِّهِمْ	اَعْمَالُهُمْ	كَرَمَادِ ِۨ	اشْتَدَّتْ	بِهِ	الرِّيْحُ
कुफ़्र किया	अपने रब से	आमाल उनके	उस राख की तरह हैं	कि सख़्त चली हो	उस पर	हवा

فِيْ يَوْمٍ	عَاصِفٍ ؕ	لَا يَقْدِرُوْنَ	مِمَّا	كَسَبُوْا	عَلٰى شَيْءٍ ؕ
एक दिन में	तेज़ हवा के	ना वो क़ुदरत रखेंगे	उसमें से जो	उन्होंने कमाई की	किसी चीज़ पर

ذٰلِكَ	هُوَ	الضَّلٰلُ	الْبَعِيْدُ ۝18	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	خَلَقَ
यही है	वो	गुमराही	दूर की	क्या नहीं	आपने देखा	कि बेशक	अल्लाह ने	पैदा किया

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	بِالْحَقِّ ؕ	اِنْ	يَّشَاْ	يُذْهِبْكُمْ	وَيَاْتِ	بِخَلْقٍ
आसमानों	और ज़मीन को	साथ हक़ के	अगर	वो चाहे	वो ले जाए तुम सबको	और वो ले आए	कोई मख़्लूक़

جَدِيْدٍ ۝19 ۙ	وَّمَا	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	بِعَزِيْزٍ ۝20	وَبَرَزُوْا	لِلّٰهِ
नई	और नहीं	ये	अल्लाह पर	कुछ मुश्किल	और वो सामने होंगे	अल्लाह के

جَمِيْعًا	فَقَالَ	الضُّعَفٰٓؤُا	لِلَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا	اِنَّا	كُنَّا	لَكُمْ
सबके सब	तो कहेंगे	कमज़ोर लोग	उनसे जिन्होंने	तकब्बुर किया	बेशक हम	थे हम	तुम्हारे लिए

تَبَعًا	فَهَلْ	اَنْتُمْ	مُّغْنُوْنَ	عَنَّا	مِنْ عَذَابِ	اللّٰهِ
ताबेअ	तो क्या	तुम	बचाने वाले हो	हमें	अज़ाब से	अल्लाह के

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَلٰمٌ ﴿23﴾	اَلَمْ	تَرَ	كَيْفَ	ضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	كَلِمَةً	طَيِّبَةً
सलाम (होगा)	क्या नहीं	आपने देखा	किस तरह	बयान की	अल्लाह ने	मिसाल	कलमा	तय्यबा/पाकीज़ा की

كَشَجَرَةٍ	طَيِّبَةٍ	اَصْلُهَا	ثَابِتٌ	وَّفَرْعُهَا	فِي السَّمَآءِ ﴿24﴾ لا	تُؤْتِيْٓ
मानिंद दरख़्त	पाकीज़ा के	जड़ उसकी	मज़बूत है	और शाख़ें उसकी	आसमान में हैं	वो देता है

اُكُلَهَا	كُلَّ	حِيْنٍ	بِاِذْنِ	رَبِّهَا ؕ	وَيَضْرِبُ	اللّٰهُ	الْاَمْثَالَ
फल अपना	हर	वक़्त	इज़्न से	अपने रब के	और बयान करता है	अल्लाह	मिसालें

لِلنَّاسِ	لَعَلَّهُمْ	يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿25﴾	وَمَثَلُ	كَلِمَةٍ	خَبِيْثَةٍ	كَشَجَرَةٍ
लोगों के लिए	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	और मिसाल	कलमा	ख़बीसा/नापाक की	मानिंद दरख़्त

خَبِيْثَةٍ	اجْتُثَّتْ	مِنْ فَوْقِ	الْاَرْضِ	مَا	لَهَا	مِنْ قَرَارٍ ﴿26﴾
नापाक के	जो उखाड़ा गया	ऊपर से	ज़मीन के	नहीं	उसके लिए	कोई क़रार

يُثَبِّتُ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِالْقَوْلِ	الثَّابِتِ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
साबित रखता है	अल्लाह	उन लोगों को जो	ईमान लाए	साथ बात	मज़बूत के	ज़िंदगी में	दुनिया की

وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ	وَيُضِلُّ	اللّٰهُ	الظّٰلِمِيْنَ ۙ قف	وَيَفْعَلُ	اللّٰهُ	مَا
और आख़िरत में	और भटकाता है	अल्लाह	ज़ालिमों को	और करता है	अल्लाह	जो

ع 4 6 16

يَشَآءُ ﴿27﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ	اِلَى الَّذِيْنَ	بَدَّلُوْا	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	كُفْرًا
वो चाहता है	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ उनके जिन्होंने	बदल डाला	नेअमत को	अल्लाह की	कुफ़्र/नाशुक्री से

وَّاَحَلُّوْا	قَوْمَهُمْ	دَارَ	الْبَوَارِ ﴿28﴾ لا	جَهَنَّمَ ۚ	يَصْلَوْنَهَا ؕ	وَبِئْسَ
और उन्होंने ला उतारा	अपनी क़ौम को	घर में	हलाकत के	जहन्नम में	वो जलेंगे उसमें	और कितना बुरा है

الْقَرَارُ ﴿29﴾	وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	اَنْدَادًا	لِّيُضِلُّوْا	عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ	قُلْ
ठिकाना	और उन्होंने बना लिए	अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	ताकि वो भटका दें	उसके रास्ते से	कह दीजिए

CALL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَوَآءٌ	لَهَدَيْنٰكُمْ ط	اللّٰهُ	هَدٰىنَا	لَوْ	قَالُوْا	مِنْ شَىْءٍ ط
यकसां/बराबर है	अलबत्ता हिदायत करते हम तुम्हें	अल्लाह	हिदायत देता हमें	अगर	वो कहेंगे	कुछ भी

ع 3 9 15

مِنْ مَّحِيْصٍ (21) ع	لَنَا	مَا	صَبَرْنَا	اَمْ	اَجَزِعْنَآ	عَلَيْنَآ
कोई पनाहगाह	हमारे लिए	नहीं है	सब्र करें हम	या	ख़्वाह जज़ा व फ़ज़ा करें हम	हम पर

وَعَدَكُمْ	اللّٰهَ	اِنَّ	الْاَمْرُ	قُضِىَ	لَمَّا	الشَّيْطٰنُ	وَقَالَ
वादा किया तुमसे	अल्लाह ने	बेशक	काम का	फ़ैसला कर दिया जाएगा	जब	शैतान	और कहेगा

لِىَ	كَانَ	وَمَا	فَاَخْلَفْتُكُمْ ط	وَوَعَدْتُّكُمْ	الْحَقِّ	وَعْدَ
मेरे लिए	था	और ना	तो ख़िलाफ़ किया मैंने तुमसे	और वादा किया मैंने तुमसे	सच्चा	वादा

لِىْ ج	فَاسْتَجَبْتُمْ	دَعَوْتُكُمْ	اَنْ	اِلَّآ	مِّنْ سُلْطٰنٍ	عَلَيْكُمْ
मेरे लिए	पस क़ुबूल कर लिया तुमने	बुलाया मैंने तुम्हें	ये कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर

وَمَآ	بِمُصْرِخِكُمْ	اَنَا	مَآ	اَنْفُسَكُمْ ط	وَلُوْمُوْٓا	تَلُوْمُوْنِىْ	فَلَا
और ना	फ़रियादरसी करने वाला तुम्हारी	मैं	नहीं	अपने नफ़्सों को	बल्कि मलामत करो	तुम मलामत करो मुझे	पस ना

اَشْرَكْتُمُوْنِ	بِمَآ	كَفَرْتُ	اِنِّىْ	بِمُصْرِخِىَّ ط	اَنْتُمْ
शरीक ठहराया तुमने मुझे	उसका जो	इंकार किया मैंने	बेशक मैं	फ़रियादरसी करने वाले हो मेरी	तुम

وَاُدْخِلَ	اَلِيْمٌ (22)	عَذَابٌ	لَهُمْ	الظّٰلِمِيْنَ	اِنَّ	مِنْ قَبْلُ ط
और दाख़िल किए जाएंगे	दर्दनाक	अज़ाब है	उनके लिए	ज़ालिम लोग	बेशक	इससे पहले

مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِىْ	جَنّٰتٍ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ
उनके नीचे से	बहती हैं	बाग़ात में	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो लोग जो

فِيْهَا	تَحِيَّتُهُمْ	رَبِّهِمْ ط	بِاِذْنِ	فِيْهَا	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ
उनमें	दुआ-ए-मुलाक़ात उनकी	अपने रब के	इज़्न से	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَمَتَّعُوْا	فَاِنَّ	مَصِيْرَكُمْ	اِلَى النَّارِ ﴿30﴾	قُلْ	لِّعِبَادِيَ	الَّذِيْنَ
तुम फ़ायदे उठा लो	तो बेशक	लौटना है तुम्हारा	तरफ़ आग के	कह दीजिए	मेरे बंदों से	वो जो

اٰمَنُوْا	يُقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَيُنْفِقُوْا	مِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	سِرًّا
ईमान लाए	वो क़ायम करें	नमाज़	और वो ख़र्च करें	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	छुप कर

وَّعَلَانِيَةً	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَ	يَوْمٌ	لَّا	بَيْعٌ	فِيْهِ
और ज़ाहिरी तौर पर	इससे पहले	कि	आ जाए	वो दिन	नहीं	कोई तिजारत	उस में

وَلَا	خِلٰلٌ ﴿31﴾	اَللّٰهُ	الَّذِيْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَاَنْزَلَ
और ना	कोई दोस्ती	अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	और उसने उतारा

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَخْرَجَ	بِهٖ	مِنَ الثَّمَرٰتِ	رِزْقًا	لَّكُمْ ۚ
आसमान से	पानी	फिर उसने निकाला	साथ उसके	फलों में से	रिज़्क़	तुम्हारे लिए

وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الْفُلْكَ	لِتَجْرِيَ	فِي الْبَحْرِ	بِاَمْرِهٖ ۚ	وَسَخَّرَ
और उसने मुसख़्ख़र कीं	तुम्हारे लिए	कश्तियां	ताकि वो चलें	समुन्दर में	उसके हुक्म से	और उसने मुसख़्ख़र कीं

لَكُمُ	الْاَنْهٰرَ ۚ ﴿32﴾	وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	دَآئِبَيْنِ ۚ
तुम्हारे लिए	नहरें	और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	सूरज	और चाँद को	लगातार चलने वाले

وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ ۚ ﴿33﴾	وَاٰتٰىكُمْ	مِّنْ كُلِّ	مَا
और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रात	और दिन को	और उसने दी तुम्हें	हर वो चीज़	जो

سَاَلْتُمُوْهُ ؕ	وَاِنْ	تَعُدُّوْا	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	لَا تُحْصُوْهَا ؕ	اِنَّ
मांगी तुमने उस से	और अगर	तुम गिनने लगो	नेअमतें	अल्लाह की	नहीं तुम शुमार कर सकते उन्हें	बेशक

الْاِنْسَانَ	لَظَلُوْمٌ	كَفَّارٌ ﴿34﴾ ع	وَاِذْ	قَالَ	اِبْرٰهِيْمُ	رَبِّ	اجْعَلْ
इंसान	अलबत्ता बड़ा ज़ालिम है	बड़ा नाशुक्रा है	और जब	कहा	इब्राहीम ने	ऐ मेरे रब	बना दे

ع 5 7 17

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاَصْنَامَ ﴿35﴾ ؕ	نَّعْبُدَ	اَنْ	وَبَنِيَّ	وَّاجْنُبْنِيْ	اٰمِنًا	الْبَلَدَ	هٰذَا
बुतों की	हम इबादत करें	(इससे) कि	और मेरी औलाद को	और बचा ले मुझे	अमन वाला	शहर को	इस

تَبِعَنِيْ	فَمَنْ	مِّنَ النَّاسِ ۚ	كَثِيْرًا	اَضْلَلْنَ	اِنَّهُنَّ	رَبِّ
पैरवी करे मेरी	तो जो कोई	लोगों में से	कसीर तादाद को	गुमराह कर दिया	बेशक उन्होंने	ऐ मेरे रब

رَّحِيْمٌ ﴿36﴾	غَفُوْرٌ	فَاِنَّكَ	عَصَانِيْ	وَمَنْ	مِنِّيْ ۚ	فَاِنَّهٗ
निहायत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला	तो बेशक तू ही है	नाफ़रमानी करे मेरी	और जो कोई	मुझसे है	तो बेशक वो

ذِيْ زَرْعٍ	غَيْرِ	بِوَادٍ	مِنْ ذُرِّيَّتِيْ	اَسْكَنْتُ	اِنِّيْٓ	رَبَّنَآ
खेती वाली	बग़ैर	वादी में	अपनी कुछ औलाद को	बसाया मैंने	बेशक मैं	ऐ हमारे रब

فَاجْعَلْ	الصَّلٰوةَ	لِيُقِيْمُوا	رَبَّنَا	الْمُحَرَّمِ ۙ	بَيْتِكَ	عِنْدَ
पस कर दे	नमाज़	ताकि वो क़ायम करें	ऐ हमारे रब	हुरमत वाले	तेरे घर के	पास

مِّنَ الثَّمَرٰتِ	وَارْزُقْهُمْ	اِلَيْهِمْ	تَهْوِيْٓ	مِّنَ النَّاسِ	اَفْـِٕدَةً
फलों में से	और रिज़्क़ दे उन्हें	तरफ़ उनके	वो माइल हों	लोगों के	दिलों को

وَمَا	نُخْفِيْ	مَا	تَعْلَمُ	اِنَّكَ	رَبَّنَآ	يَشْكُرُوْنَ ﴿37﴾	لَعَلَّهُمْ
और जो कुछ	हम छुपाते हैं	जो कुछ	तू जानता है	बेशक तू	ऐ हमारे रब	वो शुक्र अदा करें	ताकि वो

وَلَا	فِي الْاَرْضِ	مِنْ شَيْءٍ	عَلَى اللّٰهِ	يَخْفٰى	وَمَا	نُعْلِنُ ؕ
और ना	ज़मीन में	कोई चीज़	अल्लाह पर	छुप सकती	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं

عَلَى الْكِبَرِ	لِيْ	وَهَبَ	الَّذِيْ	لِلّٰهِ	اَلْحَمْدُ	فِي السَّمَآءِ ﴿38﴾
बावजूद बुढ़ापे के	मुझे	अता किए	वो जिसने	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़	आसमान में

رَبِّ	الدُّعَآءِ ﴿39﴾	لَسَمِيْعُ	رَبِّيْ	اِنَّ	وَاِسْحٰقَ ؕ	اِسْمٰعِيْلَ
ऐ मेरे रब	दुआ को	अलबत्ता ख़ूब सुनने वाला है	मेरा रब	बेशक	और इसहाक़	इस्माईल

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اجْعَلْنِيْ	مُقِيْمَ	الصَّلٰوةِ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ	رَبَّنَا	وَتَقَبَّلْ	دُعَآءِ ﴿40﴾
बना मुझे	क़ायम करने वाला	नमाज़ का	और मेरी औलाद को	ऐ हमारे रब	और तू क़ुबूल कर ले	दुआ मेरी

رَبَّنَا	اغْفِرْ	لِيْ	وَلِوَالِدَيَّ	وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ	يَوْمَ	يَقُوْمُ
ऐ हमारे रब	बख़्श दे	मुझे	और मेरे वालिदैन को	और मोमिनों को	जिस दिन	क़ायम होगा

ع 6 7 18

الْحِسَابُ ﴿41﴾ ع	وَلَا	تَحْسَبَنَّ	اللّٰهَ	غَافِلًا	عَمَّا	يَعْمَلُ	الظّٰلِمُوْنَ ۙ
हिसाब	और ना	तुम हरगिज़ समझो	अल्लाह को	ग़ाफ़िल	उससे जो	अमल करते हैं	ज़ालिम लोग

اِنَّمَا	يُؤَخِّرُهُمْ	لِيَوْمٍ	تَشْخَصُ	فِيْهِ	الْاَبْصَارُ ﴿42﴾ لا	مُهْطِعِيْنَ
बेशक	वो ढील दे रहा है उन्हें	उस दिन के लिए	पथरा जाऐंगी	जिसमें	निगाहें	तेज़ी से दौड़ने वाले

مُقْنِعِيْ	رُءُوْسِهِمْ	لَا يَرْتَدُّ	اِلَيْهِمْ	طَرْفُهُمْ ج	وَاَفْـِٕدَتُهُمْ
ऊपर उठाए हुए	अपने सरों को	नहीं लौटेगी	तरफ़ उनके	निगाह उनकी	और दिल उनके

هَوَآءٌ ﴿43﴾ ط	وَاَنْذِرِ	النَّاسَ	يَوْمَ	يَاْتِيْهِمُ	الْعَذَابُ	فَيَقُوْلُ
ख़ाली होंगे	और ख़बरदार कीजिए	लोगों को	जिस दिन	आएगा उनके पास	अज़ाब	तो कहेंगे

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْٓا	رَبَّنَآ	اَخِّرْنَآ	اِلٰٓى اَجَلٍ	قَرِيْبٍ لا	نُّجِبْ
वो लोग जिन्होंने	ज़ुल्म किया	ऐ हमारे रब	मोहलत दे हमें	एक मुद्दत तक	क़रीब की	हम क़ुबूल कर लें

دَعْوَتَكَ	وَنَتَّبِعِ	الرُّسُلَ ط	اَوَلَمْ	تَكُوْنُوْٓا	اَقْسَمْتُمْ	مِّنْ قَبْلُ
तेरी दावत	और हम पैरवी करें	रसूलों की	क्या नहीं	थे तुम	क़समें खाते तुम	इससे पहले

مَا	لَكُمْ	مِّنْ زَوَالٍ ﴿44﴾ لا	وَّسَكَنْتُمْ	فِيْ مَسٰكِنِ	الَّذِيْنَ
नहीं है	तुम्हारे लिए	कोई ज़वाल	और ठहरे रहे तुम	घरों में	उन लोगों के जिन्होंने

ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	وَتَبَيَّنَ	لَكُمْ	كَيْفَ	فَعَلْنَا	بِهِمْ
ज़ुल्म किया	अपनी जानों पर	और वाज़ेह हो गया	तुम्हारे लिए	कैसा	(सुलूक) किया हमने	साथ उनके

© ALQURAAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَضَرَبْنَا	لَكُمُ	الْاَمْثَالَ ﴿45﴾	وَقَدْ	مَكَرُوْا	مَكْرَهُمْ	وَعِنْدَ
और बयान कर दीं हमने	तुम्हारे लिए	मिसालें	और तहक़ीक़	उन्होंने चाल चली	अपनी चाल	और पास है

اللّٰهِ	مَكْرُهُمْ ؕ	وَاِنْ	كَانَ	مَكْرُهُمْ	لِتَزُوْلَ	مِنْهُ	الْجِبَالُ ﴿46﴾
अल्लाह के	उनकी चाल (का तोड़)	और नहीं	थी	चाल उनकी	कि टल जाऐं	उससे	पहाड़

فَلَا	تَحْسَبَنَّ	اللّٰهَ	مُخْلِفَ	وَعْدِهٖ	رُسُلَهٗ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
तो ना	तुम हरगिज़ समझो	अल्लाह को	ख़िलाफ़ करने वाला	अपने वादे का	अपने रसूलों से	बेशक	अल्लाह

عَزِيْزٌ	ذُو انْتِقَامٍ ﴿47﴾ ؕ	يَوْمَ	تُبَدَّلُ	الْاَرْضُ	غَيْرَ	الْاَرْضِ
बहुत ज़बरदस्त है	इंतिक़ाम लेने वाला है	जिस दिन	बदल दी जाएगी	ज़मीन	सिवाय	इस ज़मीन के

وَالسَّمٰوٰتُ	وَبَرَزُوْا	لِلّٰهِ	الْوَاحِدِ	الْقَهَّارِ ﴿48﴾	وَتَرَى
और आसमान (भी)	और वो सामने आ जाऐंगे	अल्लाह के	जो अकेला है	बहुत ज़बरदस्त है	और आप देखेंगे

الْمُجْرِمِيْنَ	يَوْمَئِذٍ	مُّقَرَّنِيْنَ	فِي الْاَصْفَادِ ﴿49﴾ ۚ	سَرَابِيْلُهُمْ
मुजरिमों को	उस दिन	जकड़े हुए होंगे	बेड़ियों में	कुर्ते उनके

مِّنْ قَطِرَانٍ	وَّتَغْشٰى	وُجُوْهَهُمُ	النَّارُ ﴿50﴾ ۙ	لِيَجْزِيَ	اللّٰهُ	كُلَّ
तारकोल के होंगे	और ढांपे हुए होगी	उनके चेहरों को	आग	ताकि बदला दे	अल्लाह	हर

نَفْسٍ	مَّا	كَسَبَتْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿51﴾	هٰذَا
नफ़्स को	उसका जो	उसने कमाई की	बेशक	अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब	ये

بَلٰغٌ	لِّلنَّاسِ	وَلِيُنْذَرُوْا	بِهٖ	وَلِيَعْلَمُوْٓا	اَنَّمَا	هُوَ
पैग़ाम है	लोगों के लिए	और ताकि वो डराए जाऐं	साथ इसके	और ताकि वो जान लें	बेशक	वो

ع 7 11 19

اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ	وَّلِيَذَّكَّرَ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿52﴾ ع
इलाह है	एक ही	और ताकि नसीहत पकड़ें	अक़्ल वाले

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ركُوعَاتُهَا: 6 | 15 سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ 54 | اٰيَاتُهَا: 99

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①	الْكِتٰبِ	اٰيٰتُ	تِلْكَ	الٓرٰ ۣ قف
और क़ुरआन वाज़ेह की	किताब की	आयात हैं	ये	الٓرٰ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION